एक खीरा तीन फाँक

प्रोफेसर श्री रामदेव झा

एक खीरा तीन फाँक

प्रोफेसर श्रीरामदेव झा

सुधा प्रकाशन
दरभंगा

• भूमिका : डॉ० श्री शैलेन्द्र मोहन झा

• प्रथम संस्करण : चन्दा झा जयन्ती १९६५ ।

• प्रकाशक : सुधा प्रकाशन (दरभंगा) ।

• प्राप्ति स्थान : ग्रन्थालय-प्रकाशन (दरभंगा) ।

• मूल्य— : दुइ टाका मात्र ।

मुद्रक : पंचायत प्रेस लहेरियासराय ।

कथा-क्रम



आमुख

कहानी आजुक साहित्यिक विधा मे सर्वाधिक सशक्त सिद्ध भऽ चुकल अछि। आधुनिक एवं नवीन संवेदना केँ व्यक्त करबाक क्षमता अन्य समस्त साहित्यिक विधाक अपेक्षा एहि मे अधिक अछि।

मैथिली-साहित्यक बहुमुखी विकास मे कहानीयो पछुआयल नहि अछि। ई गद्यक बहुविध सम्पन्नताक प्रतीक बनि गेल अछि। अपन विकासयात्रा मे रुचि संस्कार ओ रूप परिष्कार कय ई अतिशय आकर्षक बनि गेल अछि। फलतः एकरा दिश सँ उदासीन रहब कठिन अछि।

साम्प्रतिक मैथिली-कहानीक महत्त्व ओकर नवीन रूप केँ लए बढ़ि गेल अछि। बाह्यजीवनक स्थूल चित्रणसँ विमुख कहानीकारक अन्तःवृत्ति-निरूपिणी प्रतिभा, कहानी साहित्य केँ नव दिशा प्रदान कैलक अछि साम्प्रतिक मे कहानीव्यक्ति प्रधान भ गेल अछि. ओकर अभ्यन्तरीण जीवन कहानीक आधार बनि गेल अछि। फलतः कहानीक वस्तुविन्यास मे घटनाक घटाटोप नहि भेटत अपितु पात्रक उन्मुक्त हृदयाकाशक झलकी भेटत। इयह कारण थीक जे नव कहानी मे, कहानीका रपाछाँ छूटि जाइत छथि और हुनक पात्र स्वयं अपन पाठकसँ स्नेहसम्बन्ध जोड़ि लैत छनि। एहि रूप-

विकासक बहुत रास श्रेय मनोविज्ञानकें छैक जे हृदय एवं मस्तिष्कक महत्त्वकें स्वीकार करबाक हेतु प्रेरित कैलक अछि ।

व्यक्ति-केन्द्रित कथासँ ई तात्पर्य नहि जे ओकर समाज पक्ष तिरोहित भ गेलैक । हँ, एतेक अवश्य जे समाज ओतय ततबहि दूर धरि छैक जहाँ धरि व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी अछि । तथापि व्यक्तिक आशा-आकांक्षा, दुख-दर्द, अभाव-अभियोगक पाछाँ ततेक संवेदना वर्त्तमान रहैछ जे सम्पूर्ण चित्रण व्यक्तिगत नहि रहि सार्वजनीन भए जाइत अछि ।

'एक खीराः तीन फाँक' मे संगृहीत कहानी सभ, मैथिली कहानीक एकटा नवीन वर्द्धमान स्वरूपक परिचय दैत अछि । श्री रामदेव झा जी, सुरुचि-सम्पन्न कलाकार छथि, जे मैथिली कहानीक नवयुवक कहानीकारक पंक्ति मे अपन विशिष्ट स्थान बना लेने छथि । एहि कहानी सभमे वैयक्तिक जीवनक जे निरूपण भेल अछि से निश्चित रूपें सामाजिक ओ जातीय जीवनक आधार पर । एहि सभ मे लेखकक कल्पनाशीलताक संगहि यथार्थ जीवनक संतुलन वर्त्तमान भेटत । फलतः सभ कहानी मे जीवनक प्रति गहन अनुभूतिक दर्शन होइछ चेतनमनक तह मे उतरि, कहानीकार तथ्यक अन्वेषण कैलन्हि अछि तथा उपयुक्त वातावरणक निर्माण कय, व्यक्ति-समाज सँ सम्बद्ध अनेक समस्यापर सहानुभूतिपूर्वक विचार कैलन्हि अछि । अपन कथा मे ई व्यक्ति-पात्र कें समाजक ठोस धरातल पर देखबाक प्रयास करैत छथि, इयह कारण थीक जे सामाजिक रूढ़ि परम्परा, आस्था-विश्वास एवं ग्रामीण वातावरण

हिनक कहानी-साहित्यक अनिवार्य उपादान बनि गेल अछि। लोक संस्कृतिक आकर्षण हिनका लेल सर्वदा प्रबल रहल अछि तथा अपन अनेक कथा मे एकरा लेल उपयुक्त अवसर ई ताकि लेलन्हि अछि। सभसँ उल्लेखनीय विषय, जे हिनक कथा कें प्रभावशाली बनबैछ, से थीक पूर्णताक प्रभाव। निश्चय ई प्रत्येक कहानीक लेल स्थायी महत्त्वक वस्तु होइछ। आखिर कोनो कथा कें पढ़ला उत्तर की प्रभाव पड़ल ? फेर जाहि व्यापक अनुभूति ओ मानवीय संवेदना सँ ई कथा सभ समन्वित अछि ओ ऐहि मे प्राणशक्तिक स्पन्दन भरि देने अछि।

हम एहि संग्रहक प्रत्येक कथा पर विचार कय सहृदय पाठकक रसबोधमे बाधक नहि बनय चाहैत छी सक्षेपमे इयह कहब जे सुन्दर उपस्थापन शैली, वस्तु-पात्रक वैविध्य, मर्मस्पर्शी भावना, मनोवैज्ञानिक चित्रण, कोनो स्थिति वा भावकें प्रतीकक माध्यमे प्रस्तुतीकरण, कविताक सरसता एवं मनोरम ग्रामीण शब्दावली आदि अनेक विशेषतासँ समृद्ध एहि कहानी सभकें संग्रह ग्रन्थक रूपमे प्रकाशित देखि हार्दिक प्रसन्नता भऽ रहल अछि लेखकक एहि कृतिक रसास्वादन, जे एखनधरि शुभेच्छु, मित्र एवं गोष्ठी धरि सीमित छल, से आब सर्वसाधारणक लेल सुलभ भऽ जैत। मैथिली कथा साहित्यक रसिक पाठक निश्चय एहिसँ सतुष्ट हैताह एहि अवसर पर हम कथाकारकें हार्दिक साधुवाद करैत छिऐन्ह एवं शुभकामना व्यक्त करैत छिऐन्ह जे हिनक प्रतिभा-सुमनसँ शृङ्गारित हैबाक संभावना मातृभाषा कें निरन्तर बनल रहौक।

लहेरियासराय **श्री शैलेन्द्र मोहन झा**

जूड़ शीतल १९६५ ई०

एक खीरा : तीन फाँक

फेकू उठल आ बेलचासँ कोइलाक पहाड़केँ ढाहऽ लागल। कोइलाक ढेरी एके बेर हरहरा उठल। गाहकक छिट्टामे फेकू कोइला रखने जाइत छल आ ओकर ठोर पटपटाइत छलैक–बिना परमिटक कोइला''' '''मालिक जहन बिगड़ऽ लगतै तँ''' ,

सुरजी, मने ओकर घरवाली थोड़ेक दूरपर काठक मचिया पर बैसलि गाहकसँ दाम लैत छलैक। ओ बाजलि—ओकक बेर-बेगरता मालिक नै बुझतै ?'

फेकू कोइला उठबिते रहल। ओकर ओ पुरान बेलचा, बेलचाक मूठ, मूठक खियायल-घसल गहींर खाधिक लाल रंग, जेना सभ चिरपरिचित छलैक। दुनू हाथक पैघ ढेला सभ ओहि मूठक खाधिमे खप दऽ बैसि जाइत छलैक।

फेकू, मने बहुत रास फेकू सदर थानाक सरकारी चौकीदार, कोइला-डीपोकेर बेलचा-मजूर, डीपोक मालिक हरदेवसिंहक इमानदार नोकर, मचियापर बैसलि सुरजीक घरबला। सुरजी, ... भरल-पुरल देह, गोर देह, सेहन्तगर देह, आँखिमे बसि जाइबला दे... हमने सुरजीक देह, फेकूक घरबालीक देह।

नाङर फेकूक सुरजी छलैक घरबाली। सभ मिला जुला कऽ फेकूकेँ एकटा पयर, एकटा घरबाली, दूटा नोकरी आ तीनटा बेटा....।

फेकू कनेक सुस्ताइत एकबेर सुरजी दिस तकलक... जहिया गौना करा कऽ अनने रहैक सुरजीकेँ तहिया टोल पड़ोसक लोक कहने रहैक—टोलमे एहन कनिञा तँ कहियो ने आयल छलै।'

फेकूकेँ ओहि दिनुक सुरजीक लजायल, मधुआयल मुँह मोन पड़ि गेलैक।

गौनाक पाँचे-छौ-मासक बाद ओकरा चौकीदारी भेटि गेल रहैक। नील रंगक कुर्ता, मुरेठा आ पाँच हाथक भाला भेटल रहैक थानापर। पहिल दिन कान्हपर भाला धयने छल त ओहि नाङरो पयरँ ओकरा विचित्र जोश आबि गेल छलैक।

बड़ दयामन्त छलैक ओ दरोगा। फेकू सैह सोचैत छल—भगवानक कृपा आ ओकर भाग दूनू सहजोर छलैक तेँ, ने तँ ककरा सरकारी नोकरी एतेक असानमे भेटैत छैक? आ स्नेह

उमड़ि आयल छलैक सुरजीपर, ओहो बड़ि भागमन्ति अछि। ओकरो भाग एहि नोकरीमे काज कयलकैक। आ चारि-पाँच मास बाद होमऽबला सन्तानक विषयमे सोचि ओ विभोर भऽ गेल। बुझि पड़लैक जेना भाग्य ओकरालेल उन्नतिक दसो द्वार खोलि देलकैक।

फेकू भरि अन्हरिया पहरा दैत छल। खा-पीबिकऽ विदा भेल, मझिली रातिमे सौंसे गाम पहरा देलक आ भोरुकी रातिमे कोनो ठाम, ककरो दलानपर पड़ि रहल। ओही साल घुटरा जनमल रहैक। बड्ड नीक लागल रहैक घुटराक मुँह, सुरजीक मुँह। खा-पो कऽ जखन विदा होमऽ लागय पहरा देबा लेल तँ मोन अलसा जाइक। होइक जे सुरजी आ घुटराकेँ छोड़ि कतहु ने जाइ मुदा जाय पड़ैत छलैक। सरकारक पकड़ल छल जे। एक दिन पहिना ओ नहि गेलैक पहरा देबालेल। सुरजीक मोन काँपि उठलैक—डिपटीपरसँ गरहाजिर होइ छै तँ से जानौ अपन।'

आ सत्ते दरोगा गप्प दऽ पकड़ि लेलकैक गामपर। फेकूकेँ भेलैक जे 'हाकिम सब देवता होइ छै। अगरजानी जनै छै' से ओ ओहि दिनसँ कहियो ड्यूटी नहि छोड़लक। तकरा साले भरिक बाद मङला जनमल छलैक। दरोगाजीकेँ समाद कहने छलैक तँ दरोगाजीक मुहपर रोबगर

मुसकान आबि गेल छलैक। फेकूकेँ दरोगा जीक प्रति बड़ श्रद्धा भऽ गेल छलैक। ड्यूटी लेबऽमे बड़ा कड़ा मुदा तकरा बाद बड़ कोमल। फेकूकेँ मानैत छलैक। बड़ मानैत छलैक आ से देखि आन चौकीदारकेँ डाह होइत छलैक। दरोगाजी कहियो काल ओकरासँ हँसी कऽ लैक, सुरजीक हाल-चाल पूछि लैक, हलकामे घूमऽ जाइक तँ फेकूक घर धरि आबि कऽ जिज्ञासा कऽ जाइक। फेकू तिरपित भऽ जाइत छल।

दरोगाजी दोसर बेटाकेँ सोनक हलुमानी देने रहैक। फेकू हलसैत आबि कऽ सुरजीकेँ दैत कहने छलैक—देवता छै दरोगा जी! देवता!

सुरजी ओकरा हाथमे लऽ कऽ एक नजरि दऽ कऽ कोठीक कान्हपर राखि देने छलैक आ फेकुए सन आह्लाद नहि देखौने छलैक तँ फेकूकेँ सुरजीपर बड़ तामस उठल छलैक।

फेकूक बेलचा रुकि गेलैक। कोइलाक छिट्टा भरि गेल छलैक तेँ ओकरा राटनपर राखि आयल आ पुनः दोसर छिट्टामे कोइला उठाबऽ लागल।...मालिक हरदेवसिंहक कोइला सौंसे सहरमे चलैत छलैक। दिनो दिन कारबार बढ़ले जाइत छलैक। फेकूक लेल दोसर बेटा मङला बड़ भागमन्त भेलैक। ओकरा जन्मक बादे कोइला डीपोमे फेकूकेँ नोकरी भेटि गेल छलैक।...बड़ खुसी भेल छलैक फेकूकेँ आ ओही दिनसँ गति

कऽ चौकीदारी, आ दिन कऽ कोइला डीपोकनोकरी करैत अछि। बारहो मास, भिनसरसँ साँझ धरि बेलचासँ हरदेवसिहक कोइलाक पहाड़कें ढाहैत रहैत अछि, अनवरत अविराम। भरिदिन बेलचा-मजूर रहैत अछि आ भरि राति चौकीदार, लोकक जानमालक हिफाजति लेल। ककरो धन-बीत चोर ने चोरा लैक ताहि लेल।

फेकू देखलक, हरदेवसिह साइकिल रोकि कऽ उतरि गेल। ओकर कोइला उठबैत हाथ थरथरा जकाँ गेलैक। थोड़ेक दूरपर मालगाड़ीसँ कोइला उतारैत दुनू खलासीहाथ तेजीसँ चलऽ लगलैक। ओ गाहक, जे एखन धरि निश्चिन्त भऽ कऽ बीड़ी सुनगा सोंटैत छल आ धूआँ उड़बैत छल से एके बेर सकपका कऽ ठाढ़ भऽ गेल। सुरजीयो मचियापरसँ उठि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि। अपन आधा उघार छातीकें आँचरसँ झँपैत माथपरक साड़ीकें कनेक आगाँ खीचि लेलक। चारू कात एकटा आतंक, भय, आ चुप्पी पसरि गेलैक—बस कोइला खसबाक झरझराहटि मात्र सुनाइत छलैक।

हरदेवसिह अबिते एक बेर अपन मालिकाना नजरि चारू कात घुमौलक। जेना ओकरा आँखिक रोब ओहि ठामक प्रत्येक वस्तुपर ठप्पा मारने जाइत छलैक। सभ किछुकें अपना-अपना जगहपर देखि कऽ एकटा सन्तोष जकाँ भेलैक। फेर ओहि छिट्टाक कोइला देखि पुछलकैक—एकर परमिट?

फेकू सिरसिरा कऽ ठाढ़ भऽ गेल। एकबेर याचनाक आँखिसँ गाहकके देखलक जे धरतीपर अधजरू बीड़ी फेकि कऽ पैरसँ मिझा रहल छल। ओ फेर सुरजी दिस बड़ करुण दृष्टिओ तकलकैक। ओकरा बूझि पड़ैत छलैक जेना ओ भगवतीक महिखामे पड़ल हो। सहमैत बाजल—विना परमिटेक छै... ...

फेकूक मुँहसँ आधा बात बहार भेलैक नहि की हरदेवसिंह गरजि उठल। ओकर फाटल-फाटल चेरा सन आवाजमे खलासी सभक कोइला उतरबाक झरझराहटि डूबि गेलैक आकी बूझि पड़लैक, जेना ओ झरझराहटि एके बेर खूब तेज भऽ गेलैक। फेकू बुझैत छल जे की होयतैक, तें मूड़ी झुकौने ठाढ़ छल। एहिसँ आगाँ ओ किछु कैयो ने सकैत छल।

हरदेवसिंहक मुँहसँ बिछल-बिछल गारि सभ अनवरत झहरि रहल छलैक। जीह ततेक अभ्यस्त छलैक एहि गारि सभक निर्माणमे जे कनेको सोचऽ नहि पड़ैक हरदेवसिंहकें।

सभ सुनैत रहल। सुरजीयो सुनैत रहल। ओ एक बेर अपन पति दिस तकलक जे अपराधी जकाँ सभकिछु सूनि रहल छलैक। यद्यपि ओ अपराधी नहि छल। सुरजीकें बड़ अधलाह लगलैक हरदेवसिंहक बेतुकार गारि। ओकरा भेलैक जे हरदेवसिंहक फोसरीसँ भरल खोदर-बोदर मुँहकें खूब जोरसँ भम्होड़ि ली, नोचि ली, खखोड़ि ली, हबकि ली—मुदा ओ

चुपे रहलि कनी काल। फेर जेना अपनाकेँ तौलैत बाजलि—गाहकक परमिट घरपर छूटि गेलै तेँ कोइला नै भेटतै ओकरा ? हमही तँ कहलिऐ दै लेल।'

हरदेवसिंह एक बेर घूमि कऽ सुरजीकेँ देखलक, ओकर गारिक बोकार जेना एके बेर रुकि गेलैक। ओ एकदम शान्त भऽ गेल, जेना किछु भेले ने होइक। जेना समुद्र एके बेर उफना कऽ शान्त भऽ गेल हो; जेना बिहाड़ि एकाएक खसि पड़ल हो।

फेकूक नजरि मालिकपर गेलैक...अधेर देह, खद्दरक धोती कुर्त्ता... सुरजीपर नजरि गेलैक... गोलमुँह, गोर मुँह, गोर देह, मसुगर देह, अंग-अंग भरल... उताहुल। उज्जर दपदप बगुलाक पाँखि सन साड़ी, साड़ीसँ झाँपल-उघार बैगनी रंगक आङी, आङीसँ झाँपल बेसुमार जवानी। फेकू अनुभव कयलक जे जँ सुरजी सौंसे कोइलाक ढेरी लुटा दैतैक तँ कोइलाक ठिकेदार मालिक हरदेवसिंह किछु नहि बजतैक। ओकर एको रत्ती भौं टेढ़ नहि होयतैक।

ओ बेलचासँ कोइला फेकऽ लागल। हरदेवसिंहक बात पर क्षोभ होइतैक। नहि भेल होयतैक सेहो बात नहि। तथापि.... तथापि हरदेवसिंह कतेक मानैत छलैक ओकरा सभकेँ! ओकरा तीनू बेटाकेँ, सुरजीकेँ आ स्वयं ओकरा!

सालमे दू बेर—जतरामे आ फगुआमे सौंसे घरकेँ नऽव कपड़ा दैत छलैक। तीनू बेटाकेँ पैंट कमीज, सुरजीकेँ साड़ी, साया, ब्लाउज आ ओकरा धोती, गमछा आ गोल गलावला गंजी।

हरदेवसिंह अपन विशाल कोइलाडीपोकेँ एके ठामसँ ठाढ़ भऽ कऽ निरीक्षण कयलक। कोइलाक ढेरीक लगमे भूत भेल फेकू कोइलाक कोनो पैघ चेप सन बूझि पड़लैक आ एक स्थिर तृप्त दृष्टि कैश-बक्सपर देलक। लगेमे बैसलि सुरजी पर नजरि गेलैक। बूझि पड़लैक जेना सुरजी ओकरा कैशबक्समे चानीक चमकैत टाका होइक। आन दिस ताकि एक बेर फेर ओ सुरजीकेँ निहारलकैक।

कोइलाडीपोक पुबारी कात कनेक टा परती छलैक आ परतीक ओहि कात हरदेवसिंहक डेरा। हरदेवसिंह अपन साइकिल गुड़कबैत डेरा दिस विदा भेल। डेराक आगाँमे ओहि परतीमे दू टा खुट्टा गाड़ि कऽ ओहिमे बान्हल तारपर धोती, साड़ी, साया, कुर्त्ता, आङी, कच्छा, तौलिया सभ सुखाइत छलैक। पहिने मालिकक धोती-कच्छा, तकरा बाद सुरजीक साया, साड़ी—उज्जर, चाकर-चाकर कोर। आङी, हरदेवसिंहक खद्धरक कुर्त्ता। एक किनारपर फेकूक मैल चिकाइट धोती लटकल छलैक। दिनमे प्रायः काँचे सोडर दऽ कऽ

खिचने छल से मारि चितिर-बितिर भऽ गेल छलैक। से तेहने लगैत छलैक जेना हरदेवसिहक चाकर पीठपर सिहुलीक उज्जर दाग।

फेकूक नजरि अनायास अपन धोतीपर चल गेलैक। धोतीक ओ दाग देखि ओकरा अपन डाँड़ महक दिनाय मोन पड़ि गेलैक। फेकूकेँ मालिकक धोती लग अपन धोती पसरल देखि अधलाह लगलैक। सुरजीक साड़ी, साया आ आङी केहन दन लगलैक। ओकर धोती लग छलैक तेँ, की हरदेव सिंहक धोती कुर्त्ता लग तेँ—से ओ नहि ठेकना सकल।

ओ मालिककेँ डेरा दिस बढ़ल जाइत देखि कऽ कोइला उठायब छोड़ि देलक। बेलचाकेँ ठामहि पटकि देलक। आ गाहकक मजुरनीक छिट्टाक कोइलाकेँ सरिया कऽ उठाबऽ लागल।

कोइलासँ कारी भूत सन धूआपर पसेनाक टघार आबि गेल छलैक। फेकू पसेना पोछैत सुरजी लग आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। ओ एकबेर सुरजीक सौंसे देह निघारलक, ओकरा कपार पर छिटकल केशक एकटा लटपर नजरि अँटकि गेलैक। एकटा कऽ लट ओहिना छिटकल रहैत छलैक सुरजीकेँ। पुनः फेकूक नजरि तारपर लटकल धोती-साड़ी सभपर गेलैक, हरदेवसिहपर गेलैक।

एक खीरा तीन फाँक

हरदेवसिंह साइकिलकेँ खुट्टासँ ओठङा देने छल। ओ तारपर पसरल मैलका धोती देखि एकेबेर भिनकि उठल जेना ओकरा हाथमे अकस्मात् तीन दिनुक मुइल छुछुन्नरि पड़ि गेलैक। ओ गड़गड़ा उठल–के ई घिनायल कपड़ा राखि देलक? इटा एकरा ......,

ओ लगमे राखल एकटा फट्टीसँ फेकूक धोतीकेँ नीचाँमे खसा देलकैक आ बरंडापर दऽ होइत अपना कोठरीमे चल गेल।

फेकू देखलक, बाजल नहि किछु...सोचलक नहि किछु। सुरजी ओकरा दिस ताकि कऽ कहलकैक—जनै छै जे मालिक खिसियाइ छै, तँ किए टङलकै?

– हम टङ्गलिऐ से? छौंड़ा धऽ देलकै।' फेकू सत्त बात नहि बाजल छल। छौंड़ा, मने ओकर जेठका बेटा घुटरा नहि टङने छलैक। ओ ओतेक ऊँच तार नहि चूम्हैत छैक।

—महराजी नै जेतै जतरा देखऽ? जाउ ने, नहा ने आबउ। छौंड़ा सबकेँ बुला अनितै।' सुरजी कहलकैक।

—घुटरा कत्तऽ गेलै, कनी चारि पैसावला साबुन आनि दितै।' फेकूकेँ जखन कोनो अढ़यबाक रहैत छलैक वा लाथ लगयबाक रहैत छलैक तँ ओ घुटरेक नाम लैत छल।

– देहमे लगेतै? हमरवला गमकौआ साबुन लगा ने लौ,

अही ठाँ छै। आनि दिऐ ?' सुरजी आवेशक स्वरमे बाजलि ।

—उँहुँ, ओहिना नहा अबैछिऐ···' फेकू बात बदलि लेलक —बिना साबुनेक नहा लेबै मलि कऽ, देह साफ भऽ जेतै।'

फेकू गमछा लऽ कऽ पोखरि दिस चलल तँ सुरजीक नजरि ओकरे दिस छलैक। नाङर होयबाक कारणेँ लहरि जकाँ नीचाँ-ऊपर होइत देहकेँ देखैत छलि—कारी, धुधुर, कोइलाक बुकनी भरल।

पोखरिसँ जखन फेकू घूमल तँ अपन तीनू बेटा घुटरा, मङला आ असरफीयाकेँ नवका पैंट-कमीज पहिरने ठाढ़ देखलक। काल्हि खन ई कपड़ा सभ मालिक किना देने छलैक। सुरजीए बजारसँ अनने छलैक मोटा बान्हि कऽ।

ओ एक बेर तीनू बेटाकेँ बेरा-बेरी देखलक; असरफीयाक पैंट-कमीजपर निमिष भरिलेल नजरि थम्हि गेलैक। ओ घुटरा आ मङलासँ बेसी चिक्कन छलैक, चमकैत छलैक। फेर सुरजीक अधबहिञा बैगनी आङीपर नजरि गेलैक, सत्ते बड़ नीक लगैत छलि।

सुरजी रातिखन सब कपड़ा देखबैत कहने रहैक—आङीक ई कपड़ा मालिक अपनेसँ बिछलकै। बड़ पसिन्न पड़ै छै रंग।'

आ सुरजीक देहपर आरो पसिन्न पड़ैत होयतैक।

सुरजी जखन ओ कपड़ा सभ देखबैत छलैक तँ ओकरा मुँह पर डिबियाक इजोत नीक जकाँ पड़ैत छलैक। फेकूकेँ बूझि

पड़लैक जेना सुरजीक मुँह गमकैत होइक। भेलैक जे ई गमक लगिते रहय। भेलैक जे सुरजीक मुँह अपना दिस खीचि ली। मुदा से सभ किछु ने कयने छल। खखार फेकबाक लाथेँ बाहर चल आयल छल।

रातुक बात सभ जेना ओकरा मोन पड़ि गेलैक। ओ हाब्जि-हाब्जि अपन पुरनका धोती पहिरऽ लागल।

—मर! नबका धोती-गंजी नै पहिरतै? आइ भगवत्तीक जतरा छै।' सुरजी पुछलकैक।

—मर बहीं! डाकक कहबी मोन नै छै जे मङला मारय जान सँ? आइ मङल छै नऽब बस्तर कोना पहिरिऐ?'

—जतरा दिन ई सब नै धयल जाइ छै।' सुरजी बाजलि।

—एखन यैह पहीरि लै छिऐ।' ई कहैत फेकू अपन ढेका खोंसि लेलक।

मालिक हरदेवसिंह साइकिल गुड़कौने आबि गेल छलैक। सुरजीसँ दिन भरिक हिसाब लेमऽ लगलैक। हरदेवसिंह नहि रहैत छल तँ सुरजीए हिसाब रखैत छलैक। सुरजीयो नहि रहलैक तँ फेकू हिसाब रखैत छलैक।

हरदेवसिंह नोटकेँ उपरकामे आ रेजकीकेँ निचलका जेबीमे खसा देलक। एक बेर मन्न दऽ उठलैक।

हरदेवसिंह आ सुरजी तखन आमने-सामने ठाढ़ छल।

बगुलाक पाँखि सन धोती-कुर्त्ता, तूरक फाहासन सुरजीक साड़ी, साड़ी तरमे चकमक करैत हरियर छीटक साया। डाँड़सँ उपर छिड़ियायल उधियायल आँचर। उभरल देहपर कसल बैगनी रंगक ब्लाउज ... तऽरमे दू आङुरक फीता सन उज्जर-उज्जर घेरा। सुरजी देखबामे बड़ दीब लगैत छलि। से नीक लगितो, एक-दय नहि नहि नीक लगलैक फेकूकेँ हरदेवसिंहक आगाँमे ठाढ़ि सुरजी।

हरदेवसिंहक साँसक बसात सुरजीक मुँहपर, छातीपर पड़ैत छलैक...छिलकलहा लट कपैत छलैक।

फेकू अपन माथ घुमा लेलक तीनू बेटा दिस। छौ बरखक घुटरा—मैलछोन, बकलेल जकाँ। पाँच बरखक मङला—कने फरिच्छ, फुर्तिगर आ साढ़े तीन बरखक असरफीया—गोर, थुल-थुलाह सन, बजबामे ठेसगर। मङलाक गरदनिमे दरोगाजीक देल सोनक हलुमानो...मैल, कारी डोरामे गाँथल। आ एक बेर फेर सुरजी दिस ताकि अपन भिजलाहा धोती-गमछा मिरचैयाक फुनगीपर पसारऽ लागल।

हरदेवसिंह हिसाब लऽ कऽ पाछाँ घुमल तँ तीनू छौंड़ापर नजरि पड़लैक।

—की रे भुटकुन सभ! जतराक मेला देखऽ जेबेँ ?' हरदेव सिंह जेबीसँ निकालि कऽ एक-एक टा चौअन्नी घुटरा आ

मङलाक हाथमे दऽ देलकैक। एकटा अठन्नी असरफीयाक हाथमे दैत कहलकैक—तोँ सभसँ छोट छेँ तेँ सबसं वेसी ले।'
आ एकटा हल्लुक सन चटकन ओकरा गालपर लगा देलकैक।

छौंड़ा सभ खुशीसँ बिहसि उठल। हरदेवसिंह मुसुकि उठल। एक बेर असरफीया दिस, दोसर बेर सुरजी दिस आ तेसर बेर कोइलाक विशाल ढेरी दिस, अपन ग्रीन रैले साइकिल दिस तकलक। संभव छलैक सुरजीक ठोरपर सेहो मुसुकी आबि जैतैक आ आँखिक बामा कोर दऽ भहरि जैतैक। मुदा से नहि भेलैक। सुरजीक ठोरपर मुसुकी अबैत-अबैत नहि अयलैक।

हरदेवसिंह पैडिलपर पैर राखि विदा भऽ गेल।

फेकू अपन धोती पसारि कऽ नहूँ-नहूँ आयल त छौंड़ा सभक हाथमे पाइ देखलकैक। बिना कोनो आश्चर्यक पुछलकैक– के देलकै ?'

—मालिक।' सुरजी एक शब्दसं फाजिल नहि बाजलि।

—त लऽ कऽ राखि लेतै से नै ? कतौ हेरा-ढेरा जेतै त ,

—बेस त...' संक्षेपमे बजैत सुरजी तीनूक हाथसँ पाइ लऽ आँचरमे बान्हऽ लागलि।

तीनू छौंड़ा हाफ्फु भऽ गेल मुदा सुरजीक डरेँ किछु नहि बाजल। कहियो काल सुरजीक तेहन मुँह भऽ जाइत छलैक जे छौंड़ा सभ सकदम्म भऽ जाइत छलैक। आइ ओहने मुह भऽ

गेल छलैक सुरजीक ।

—चल-चल, झिल्ली-कचुरी किना दियौ तोरा सभकें ।'
फेकू बूझि गेल, तीनू बेटाक मोन मलान भऽ गेलैक। तीनू छौंड़ाकें एखन मायस बेसी नीक लगलैक बाप। क्षण भरिक लेल ओकरा सभक मोनमे भेलैक जे बाप माय बनि जैतय !

साँझ भेल जाइत छलैक। पच्छिम दिस टिसनक ओहि पार आमक बड़का गाछीस आरो पच्छिम सुरुज डूबऽ लेल उताहुल भेल दौड़ल जाइत छल। महराजीक जतराक तमासा देखबा लेल देहात सभस लोक दुलकी मारने टघरल अबैत छल। सौंसे महराजी तमसगीर सभसँ भरि गेल होयतैक।

फेकू जखन चलऽ लागल तँ सुरजी टोकलकैक—'ओमहरसँ अबैत-अबैत त बड़ी राति भऽ जेतै। एत्ते दूर चलैमे थाकि नै जेतै ? रिक्सा कऽ लेतै से नै ?'

सुरजीक बात नीक लगलैक फेकूकें। सुरजी जखन आँचर केर गीरह खोलऽ लागलि, जाहिमे छौंड़ा सभक पाइ बान्हल छलैक मने हरदेवसिंहक देल अठन्नी-चौअन्नी बान्हल छलैक—तँ ओकर मोन कोनादन करऽ लगलैक। ओ कहलकैक—'छोड़ि ने दौ, आहिना चल एबै। कते दूर छैहे महराजी ?'

एक बेर ओ अपन नाङर पैर आ तीनू छौंड़ाकें तकलक आ विदा भऽ गेल।

सुरजी ममतासँ देखऽ लागलि अपन घर बलाक नाङर पैरके ँ। मोन पड़लैक अपन गमकौआ साबुन…मालिकक देल मोटका धोती-गंजी…आँचरमे बान्हल अठन्नी-चौअन्नी…हरदेव सिहक अठन्नी चौअन्नी। सामने देखलक अपन घरबलाके ँ… नहि लेलकैक…किछु नहि लेलकैक फेकू। सुरजीक मोन ओकियाय लगलैक। ओकर देह घमघमा गेलैक। बाँहि आ छाती कसमसा उठलैक। भेलैक जे फेकू आबैक आ गत्तर-गत्तरके ँ गीजि दैक मचोड़ि दैक…भेलैक जे आङी-साया सभके ँ रित्ती-रित्ती कऽ फाड़ि-चीरि कऽ फेकि दी आ दौड़ि कऽ अपन घरबलाक मिरचैयापर पसरल मैलका-फटलाहा धोती पहीरि ली—देह उघार रहतै, तँ रहतै…, छाती उघार रहतै तँ रहतै…छातीक सम्पत्ति झाँफल नै रहतै तँ नै रहतै!

सुरजीके ँ मोन पड़लैक मोछबला दरोगा आ खोदर बोदर मुँहबला हरदेवसिंह। सोझाँमे देखलक हलुमानीवला मङलाके ँ आ थुलथुलहा असरफीयाके ँ…भेलैक जे ओहि दूनू बेटाक मुँहपर थूक घऽ दी आ घुटराके ँ अपना छातीमे समेटि ली…घरबलासँ सटि कऽ ठाढ़ि भऽ जाइ एकदम सटि कऽ जे लोक देखिते मातर बूझि जाय जे ई दुनू बेकती… फेकू आ सुरजी…सुरजी आ फेकू…बीचमे घुटरा…फेकू-घुटरा-सुरजी…सुरजी-घुटरा-फेकू…।

एक खीरा तीन फाँक

सुरजी किछु ने कयलक। ओ खाली सतृष्ण नजरिसँ फेकू दिस तकैत रहलि। एखन जँ फेकू ओकरा दिस एको नजरि तकितैक तँ ओ अमृतसँ नहा जाइत। सौंसे देह फेकूक दृष्टिक अमृतसँ भीजि जैतैक, तीति जैतैक। मुदा से सब भेलैक नहि, फेकू ओकरा दिस नहि तकलकैक। ओ तीनू छौंड़ाकेँ आगाँ हँकने जाइत रहल, आगाँ। सुरजीक निराश दृष्टि-चल जाइत रहलैक ओकरा पाछाँ-पाछाँ।

टीसनसँ उत्तर, रेलवी लाइनसँ पूब झिल्ली-कचुरीक दोकान। रिक्सावला सब घुघनी फकैत छल। मोदियाइनि बिकरी-बट्टामे लागलि छलि, रिक्सावला सभक नजरि छलैक ओकर बेटी दिस जे कचुरी छनैत छलैक।

फेकूओकेँ नोक लगलैक मोदियाइनिक बेटी—घाम आ पसेना सँ भरल मुँह। ओ बाजल—मोदियाइन! खुआउ किछु।'

—कचुरी छनाइ छै टटका।' फेर केँ मोदियाइनि कहलकैक–बेटी गे बुचिया! हजराकेँ चारिटा कुड़कुड़ ताकि कऽ कचुरी दही तऽ।'

चौकीदार फेकूकेँ मानैत छैक मोदियानि। अन्हरिया रातिमे फेकू ओकरा घर लग आबि कऽ टाहि दऽ जाइत छैक तीन बेर कऽ।

बुचिया ओकरा कचुरी देमऽ अयलैक। फेकू अपन हाथ ओरि देलक कचुरी लेबाकलेल, मुदा एहनसन बूझि पड़ैत छलैक

जेना ओकर हाथे लेबऽलेल अपन तरहत्थो ओरने हो। ओकरा बुचियाक हाथ बड़ नीक लगलैक। भेलैक जे छूबि दिऐक ओहि हाथकेँ। कनी छुबियो देने छेलैक। मुदा तखने पलभरि लेल आँखिपर सुरजी आबि गेलैक। से तहिना, जेना राति कऽ मोदियाइनिक घर लग ठहकऽ काल बुचियाक खोंखी सूनि कऽ मोन सस्पृह भऽ उठैत छैक आ तखने सुरजो मोन पड़ि जाइत छैक।

फेकू उजबुजा गेल जे बुचियाक हाथ नीक की सुरजीक।

ओ एक-एकटा कचुरो तीनू छौंड़ाकेँ देलकैक आ एकटा अपना मुँहमे धऽ लेलक।

—मोदियाइन! छौ पाइक झिल्ली दियऽ।' फेकू बाजल।

बुचिया सँ झिल्ली लेलक तँ फेकूक नजरिपर पड़लैक मङला, ओकर सोनक हलुमानी···असरफीया, ओकर थुलथुल देह,ओकर चिक्कन पैंट, कमीज। फेकू छन भरिक लेल बिलमि गेल। की ने की सोचि कऽ एकटा झिल्ली असरफीयाक हाथमे, एकटा मङलाक हाथमे दऽ कऽ चारिटाघुटराक हाथमे दऽ देलकैक जे एक कातमे ठाढ़छल।

मङला तमसागेल मुदा बाजल नहि। असरफीया एकटा झिल्ली देखि कऽ बिढ़नी भऽ गेल—नै, हम नै लेब······ हम नै लेबै···हम···नै···, ओ हाथ-पैर पटकऽ लागल।

फेकू ओकरा बौंसैत कहलकैक—जे सबसँ छोट रहै छै तकरा सबसँ कम भेटै छै… पहिने ई खा ने ले… '

असरफीया चुप नहि भेलै ह। ओ आरो छिड़ियाय लागल। फेकूके बड़ जोर तामस भेलैक। तावतमे मङला सेहो आपठ खसबऽ लगलैक। ओ दाँत पीसैत बाजल—सार! लै जाह ने तँ ठोंठे पकड़ि कऽ उठा कऽ बजारि देब जे मरिए जेबह…'

निमिष भरिक लेल ओकरा आँखिमे सुरजीक चित्र आबि गेलैक जे ओ पहरासँ अबैत छल तँ कहियो-कहियो कऽ देखैत छलैक सुरजीक अलसायल - झमारल देह, छिड़ियायल केश, उतरल मुँह, कड़ुआयल आँखि, करुण विकल आ विवश आँखि, बिसबिसाइत अंग, विरुमल मोन।

फेकू आगाँ सोचि नहि सकल। ओ छौटा झिल्ली आरो लेलक, दू-दूटा कऽ तीनू छौंड़ाके दऽ देलकैक। आब असरफीया आ मङलाके तीन-तीन गोट भेलैक आ घुटराके छौटा। फेकू झिल्लीके बराबरि-बराबरि बटबामे जेना असमर्थ छल। घुटराकेँ बखरामे बेसी देबाक ओकरा अभ्यास भऽ गेल छलै किन्तु मङला ओ असरफीयाके किछु नहि देब ओकरा लेल असंभव भऽ जाइत छलैक।

ओकरा माथमे घूमिगेलैक दरोगा आ हरदेवसिंह। सोझाँमे छलैक बुचिया। मुदा तैयो ओकरा सुरजीक स्थानमे नहि बैसा सकल—बाँचि गेलैक खाली सुरजी। * * *

एक खीरा : तीन फाँक

भसियाइत दीयर

वैद्यनाथक दर्शन कऽ हरिनाथ डेरापर अयलाह आ पुरैनिक पातमेसँ एकटा पेड़ा निकालि कऽ मुँहमे धऽ लेलनि। लोटामेसँ गिलासमे पानि ढारि घुट-घुट कऽ पीबि गेलाह। पतौड़ाकेँ पत्नी दिस घुसका देलथिन—अहूँ पानि पीबि लियऽ।'

हरिनाथक पत्नी रामवती अपन नातिक गमछीमे पतरकी चूड़ा आ बतासा दैत छलथिन। हरिनाथ तिरपित नजरिसँ अपन नाति दिस तकलनि, रामवती दिस तकलनि आ वैद्यनाथ बाबाक मन्दिरक त्रिशूल दिस तकलनि। ओहि ठामसँ सोझे दृष्टिपर त्रिशूल छलैक। श्रद्धासँ हुनक माथ नत भऽ गेलनि। क्षणभरिक लेल मन्दिरक भितरका भाग मोन पड़ि गेलनि····बीत भरिक दीपक पनारि, ओकर दाप, उत्तर दिस ले भेल भोला बाबाक रूप···।

एक खीरा : तीन फाँक

मन्दिरमे प्रवेश करैत देरी विभोर भऽ गेल छलाह हरिनाथ। जीवनक आधासँ अधिक भाग वैद्यनाथ-दर्शनक नेयार-भासमे बीति गेल छलनि। एतेक बिहऽबे ने होइत छलनि जे धामपर जा सकथि। रामवती तँ बाबा वैद्यनाथक कतेक कबुला-पाती कऽ कऽ बिसरि गेल छलीह। आ जखन मोटा-चोटा बान्हि कऽ दुहू गोटा सत्ते विदा भेलाह तँ हृदय निस्सीम आनन्दसँ आपूरित भऽ उठल छलनि। दुनू बेकतीक मोनमे विचारक उधियान होइत रहलनि जे ई माङबओ माङब, मुदा मन्दिरमे गेला उत्तर किछु मोन नहि रहलनि। दुनू गोटा नातिक कबुलाबला लऽटक मूड़न करा कऽ बाबाक दर्शनक हेतु मन्दिरमे प्रवेश कयलनि तँ सहसा किछु नहि फुरलनि जे की माङी। दुनू अकबकायल जकाँ कऽल जोड़ने ठाढ़ रहथि आ बीचमे नाति ठाढ़ भेल लोक सभके देखैत रहनि।

हुनका दुनू बेकतीक आँखि एकदम सादा कागतसन छलनि, हरियर-कचोर पानिसन छलनि, शरदूक निर्मल-नील आकाशसन छलनि।

हरिनाथके मोन पड़लनि, जखन पहिलबेर वैद्यनाथ धाम आयल छलाह। सासुरक लोक, मने रामवती अपन परिवारक संग आयलि छलीह आ हरिनाथ गामपरसं लाथ कऽ कऽ

आयल रहथि। नव उमीर छलनि, नव बियाह भेल छलनि। सब लोकसँ चोरा कऽ दुनू गोटा संगहि-संग मन्दिरमे दर्शन करऽ गेल छलाह। पाछाँ-पाछाँ चलैत रामवती लजविज्जी लकाँ सिह-रलि-समटलि छली। होइत छलनि, सभ लोक हमरे दिस ताकि रहल अछि आ तेँ मोन भेल छलनि जे चुपेचाप पड़ा जाइ। एक बेर हरिनाथके कहबो कयलथिन जे—यौ! हमरा लाज होइ अछि अहाँ संग जयबामे। हम चल जाइ छी डेरा।'

—बताहिजकाँ नहि करी।' हरिनाथ मधुरतासँ डटैत कहने छलथिन आ रामवतीक पड़ा जयबाक आशंकासँ हाथ पकड़ि लेने रहथिन।

मन्दिरमे बाबा वैद्यनाथके गोड़ लगैत काल दुनू गोटाक नजरि मीलि गेल रहनि। नजरि मिला कऽ ताकऽ लगलाह। दुनू गोटा खूब हँसल रहथि, जेना ओ सभ केवल हँसीक देवताके प्रणाम कयने होथि। तखन अनजान जीवनक उत्सुकता रहनि··· एखन छलनि झाँझर भेल जीवनक गम्भीर थकान··· ।

ओहि बेर दुनू गोटा शिवगंगाक पाथरबला घाटपर सभसँ नजरि बचा कऽ बैसल रहथि। बड़ नीक लागल रहनि भाङ घोरल सन शिवगंगाक पानि, पानिमे छलमल करैत माछ, अकोनक फूल आ बेलपातक डाला भरि कऽ बेचैत छौंड़ी सभ, जारनिक बोझ माथपर लेने वा पलासक दोनाक बोझ रखने सौतारिन

छौंड़ी सभ, उनटा आँचर फेकने, रेशमी केश फहरौने बङालिन सभ…।

ओतेक निश्चिंत भऽ कऽ बैसबाक आ देखबाक सेहन्ता तँ बहुत बेर भेलनि मुदा फुरसति कहियो ने भेलनि जेना। ओतेक दिनुक बाद हरिनाथ आ रामबती फेर एहो बेर वैद्यनाथ धाम आबि सकलाह।

खुट्टीपरसँ कुर्त्ता उतारि कऽ पहिरैत पत्नी दिस एक बेर बड़ पुरान दृष्टिसँ तकलनि। बड़ चेष्टा कयलनि जे रामवती फेर एकबेर ओहि पुरान रूपमे देखि पड़थि। किन्तु से नहि भेलनि, हुनका आगाँमे यैह थाकलि-हारलि रामवती छलथिन, नातिकेँ चूड़ा आ बतासा खुअबैत।

हरिनाथकेँ थोड़ेक लाज भेलनि, '… केवल दुइए बेर बाबाक दर्शन कयलहुँ! लोक तँ कतेक बेर ने आयल होयत आ हम दुइए बेर!' हरिनाथ एक बेर अपनेपर खौंझा उठलाह … सत्ते कहैत छलि मनिञा माय जे भरि जनम हम सभ पेटे भरबाक आ अंगे झपबाक पाछाँ बेहाल रहलहुँ।'

ओ हाथमे छड़ी लऽ सिमटीपर ठोकैत बजलाह—'अहाँ पेड़ा नै खेलियै? सदिखन जिद्दे रहै अछि?'

—खा लेबै।' रामवती छोटे सन उत्तर देलथिन।

हरिनाथकेँ रामवतीक ई उत्तर एकोरत्ती नीक नहि

लगलनि। ओ कहलथिन—बजार बूलऽ चलब तँ चलू जल्दी।'

मुदा पत्नी मुट्ठीसँ नातिक धोकड़ीमे चूड़ा रखैत रहलथिन। किछु बजलथिन नहि। हरिनाथ फेर बजलाह—अहींकेँ कहै छी, चलब तँ चलू।'

—अहाँ भऽ आउ, हम नै जायब कतौ।' चूड़ाक गजियाकेँ रामवती बान्हऽ लगलीह।

—किएक, अहाँ किएक ने जेबै ?'

—ओहिना, मोन नै अछि बुलबाक। संग-संग बूलब से लोक की कहत ? आब की संग-संग बुलबाक वयस धयले अछि ?'

रामवतीक बोलमे हरिनाथकेँ व्यंग्य जकाँ बूझि पड़लनि। भेलनि, जेना ओ हुनक जीवनक उपहास कऽ रहल छथिन। ओ बजलाह—हमरा बेसी भुकाउ जुनि !'

—हम किएक भुकायब ? अपने भूकि रहल छी किने ? हम तँ कहलौं जे हमर पैर दुखाइ अछि, नै बूलि होयत।'

हरिनाथकेँ छनेमे तमसा कऽ उढ़ि-बड़ेरा मचा देबाक अभ्यास जेना जागि गेलनि। छड़ी पटकि कऽ कुर्त्ता निकालि कऽ फेकि देलनि—करू, मोनमे जे आबय से। यैह कान धरै छी। बड़ अहलादसँ अनलौं तकरे ई सभ चेन्ह दै छी। कतेक देबे-सेबे एलौं तँ .... ' ओ हाथमे लोटा लऽ बाहर विदा

भेलाह—हमरा जिनगीक घेघ छथि, बलाय छथि। कोन अपराधेँ हमरा करम मे सटि गेली! काँकोड़ बना देलनि ...।'

—कहियौन बाबाकेँ, एहि ठाम अपने शरणमे हमरा राखि लेथि। कोन एते दिन अहाँकेँ सुख देलौं जे आब देब? हमरा सभ सन फाजिल लोकलय मौगतियो ने छनि भगवान् लग।'

—मनिञा माय! हम कहि दैछी, अपन बहसल मुँह समेटि कऽ राखू।' ओ हाथक पानि-भरल लोटाकेँ ठामहि बजारि देलनि। सौंसे आङन पानि पसरि गेलैक। ओ बड़का डेग दैत बाहर चल गेलाह।

पंडा, पंडाइन आ पंडाक बुढ़िया माय सभ आबि कऽ बरंडापर ठाढ़ भऽ गेल। बुढ़िया पंडाइन रामवती लग आबि हरिनाथक तामसक कारणक जिज्ञासा कयलकनि।

रामवती अन्यमनस्क जकाँ कहलथिन—हिनकर जिनगी भरिक ढाठिए येह छनि। छने भरिमे तूम-कलाम मचा दैत छथिन।'

रामवती एहिसँ आगाँ नहि बाजि सकलीह। पतिकेँ फेर दुरुक्खा लग अबैत देखि चुप भऽ गेलीह आ पंडाइनिक भनसाघरक देहरिपर चल गेलीह। हरिनाथकेँ जखन बड़ तामस होइत छलनि तँ पहिना फुनफुना कऽ बाहर चल

जाइत छलाह आ थोड़बे कालमे चल अबैत छलाह। रामवती केँ ई बात बूझल छलनि। ओ पंडाइनिक लगमे बैसि रहलीह आ ओकरे संग बेलपातक डंटी खोंटऽ लगलीह।

हरिनाथ कनेक काल आङनमे ठाढ़ रहलाह। अपना नातिकेँ मुचुर-मुचुर चूड़ा फँकैत देखैत रहलाह। ओ एहन सन ठाढ़ छलाह जेना क्यौ अछोप हो। ई बात मोनमे अबिते ओ क्षुब्ध भऽ गेलाह। हुनका तामसक की प्रतिक्रिया भेलनि हुनक पत्नीपर से देखऽ लेल नजरि चारू कात खिरौलनि मुदा क्यौ नै भेटलनि, मने पत्नीक दृष्टि नहि भेटलनि, जकरा ओ तकैत छलाह। खाली खम्हेली, तुलसीचौरा, एक दिस ऐंठार, दोसर दिस थोड़े सुखायल अकोनक फूल आ, सुखायल बेलपात आ ओकर डंटी। नाति धोकड़ीमेसँ चूड़ा लऽ कऽ फँकिते छलनि। ओ गंजीए पहिरने, कान्हपर गमछा राखि कऽ बजार दिस चल गेलाह।

रामवती पंडाइनिक लगमे बैसलि छगुनैत रहलीह। मोन एकदम अम्मत भऽ गेलनि, तीत-जहर भऽ गेलनि ..... ! तीर्थोमे ई टेनामेनी लगले आयल। की वहने होयत ई पंडाइनि सभ ! ..... मोन पड़ि गेलनि टूटल घर, फाटल साड़ी, मसकल कुर्त्ता, पेओन लागल धोती, अपन तीनटा मुइल सन्तान, एकटा जीवित मनिजा बेटी ओ ओकर एकटा बेटा, मने हुनकर नाति, हुनक

पतिक नाति। मोन पड़लनि अपन परिवारक पसार, दुइटा मसोमाति पितिया सासु, एकटा विधवा ननदि, एकटा मैट्रूअरि जैधी, दूटा दरिद्र भागिन, चारि-पाँच बिगहा खेत, एकसर कमैनिहार हुनक पति ।

रामवती आगाँ आरो नहि किछु सोचि सकलीह। ग्लानि जकाँ भऽ गेलनि। हुनके जिदपर टाका पैंच लऽ कऽ हरिनाथ वैद्यनाथ धाम आयल छलाह नातिक मूड़न कराबऽ। रामवती कें भेलनि, ओ बड़कीटा अपराध कऽ गेलीह। भेलनि जे ओ सभ दिन अपना पतिक संग अपराध करैत रहलीह। ओ सोचैत रहलीह जे—मानलौं जे ओ तमसाह छथि, छोटो-छोटो बातपर तमसा जाइत छथि मुदा तैयो हमरा तँ रोच रखबाक चाही। हमहूँ तँ बात-बात पर टोकारा दऽ दै छियनि! हुनक बोल सदिखन रुच्छे आ रोड़ाह रहै छनि, से जाहि पुरुखकें एना छाती तोड़ि कऽ बड़द जकाँ बहऽ पड़तै तकरा लेल ई अजगूते कोन!··· सहसा स्नेह उमड़ि गेलनि पतिपर। दरेग भेलनि हुनक परिस्थितिपर आ बड्ड पछतावा भेलनि अपन व्यवहारपर, अपन बोलपर ··· । जँ पंडाइन आ ओकर सासु ओहि ठाम नहि रहितैक तँ हुनका आँखिसँ हहा कऽ नोर खसि पड़ितनि।

—नानी! पानि। पानि दे ने गय!' नातिक सोर करब

भसियाइत दोथर

सूनि ओ ऊठि गेलीह। सुराहीमेसँ पानि ढारि कऽ नातिक हाथमे धऽ देलथिन। अपनो बड़ पियास लागल छलनि, अधरतियेसँ कंठ सुखाइत छलनि। बिना बाबाक दर्शन-पूजा कयने मुँहमे कोनो किछु दितथि। रातिखन दुनू बेकती तीर्थ उपवास कयने छलीह। नातिकेँ पानि पीबैत देखि तृष्णा बढ़ि गेलनि। अपना लेल एक लोटा पानि ढारि कऽ पीबा लेल बैसलीह मुदा पीबि नहि सकलीह। पतिकेँ अबैत देखि थकमका गेलीह।

जेना बाजारमे जी नहि टीकल होनि तहिना थोड़बे कालमे ओ चल आयल छलाह। हाथमे बड़कीटाक पतौड़ा आ चरखाना गमछामे पैघ सन मोटरी छलनि। आबि कऽ देखलनि जे रामवतीकेँ जे पेड़ा देने छलथिन से ओहिना पड़ल छलैक। फेर छोभ भेलनि। ओ बैसि कऽ मोटा-चोटा सरियाबऽ लगलाह।

रामवतीकेँ आश्चर्य भेलनि पतिकेँ मोटा सरियबैत देखि कऽ। ओ विस्मय भरल स्वरमे बजलीह—मोटा सरियबै छियै, एखने जेबै ?'

—तँ की एहि ठाम घर बान्हब ?' बिनु एम्हर-ओम्हर तकने हरिनाथ बजलाह।

—कहलियै बासुकीनाथ जेबै ... ?

एक खीरा : तीन फाँक

—जकरा रहबाक हेतै से रहौ, हम तँ अपन चललौं।'

पतिक लोहछल गप्प सूनि कऽ चुप रहि गेलीह रामवती। किछु क्षण पहिलुक गप्प आ बतकहीं बिसरलि नहि छलीह। ओ मद्धिम स्वरें पुछलथिन—किछु खा पीबि लितौं ने तऽसक दिन थिकै …।'

—खबरदार कहि दै छी। हमरा जनि टोकू।' हरिनाथ तमतमा उठलाह—अपन जे इच्छा हो से करू। हमरा सँ अहाँ किछु नहि पूछि सकै छी। हम अहाँकें कहनिहार के? अगिला जन्ममे भगवान् हमरा संग नहि देथि से मनाउ।'

रामवतीक आँखि नोरा गेलनि।

रामवती नहि खयने छलीह। हरिनाथ नहि किछु खयने छलाह। रामवती जनैत छलीह जे हुनक पति आब ककरो किछु ने सुनथिन। जहिया कहियो रामवती अपन मरबाक गप्प तामसमे बाजि जाइत छलीह तहिया ओ एहिना भऽ जाइत छलाह। एकदम बेसम्हार। ककरोसँ बौसाइत नहि छलाह। ई बात बुझितो एना किएक बाजि गेलीह, एहिपर रामवतीकें बड़ क्षोभ भेलनि। अपनापर अपार क्रोधभेलनि।

ओ पतिक पसेना भरल मुँह दिस तकलनि तँ हुनकापर तामस भरल दया उमड़ि कऽ रहि गेलनि। चुपचाप भरलो

लोटा पानि उभीलि देलथिन आ लोटाके मोटरीमे बान्हि देलथिन। हरिनाथ मोटाक डोरीक अन्तिम बन्हन दैत रामवती दिस ताकि कऽ रहिं गेलाह।

ट्रेनमे दुनू गोटा गुम्म-सुम्म भेल बैसल···कखनो-कखनो कऽ नातिसँ गप्प करैत··· ट्रेन अपना गतिसँ पड़ायल चल जाइत छल। गरम-गरम बसात डिब्बाक भीतर आबि रहल छलैक। हरिनाथ रेलवी लाइनक दुनू कातक धह-धह जरैत कारी-कारी पहाड़केँ देखैत जाइत छलाह। नाति कय बेर ने पानि माङि चुकल छलनि। बाटमे कोनो टीसनपर पानिक आशा नहि बूझि पड़लनि। अपनो पियासेँ जी चटपट करैत छलनि। धधरा सन बसात आबि-आबि कऽ देह पका रहल, छलनि जेना गरम भट्ठी जरैत हो। ओ सामने वला बर्थपर औंघाइत पत्नीकेँ देखलनि, लटुआयलि सनि, ठोर सुखायल, फुफड़ी पड़ल कपार आ गालपर रेखा सभ स्पष्ट भऽ गेल छलनि! हरिनाथकेँ पत्नीपर ममता जकाँ भऽ गेलनि।···· मनिञा माय तँ एखनधरि पानिञो ने पीलनि अछि! लोटा महक पानिञो तँ उभिलिये देने छलीह। कतेक पियास लागल होयतनि? भोरेखन कहने छलीह जे पियास लागल अछि।·········

पत्नीक आँखि नातिक देह झमोड़ने फूझि गेलनि आ हरिनाथ झट दऽ ओमहर सँ अपन मूह घुमा कऽ दोसर दिस ताकऽ

लगलाह, जेना बड़ीकालसँ ओमहरे तकैत होथि। मुदा मोनमे उद्वेग लऽ लेलकनि—सबा सोलहआना दोष हमरे थीक। हमरे कारणेँ ओ भूखेँ-पियासेँ सिदतिमे छथि।

एकबेर मोन भेलनि जे जा कऽ मनिञा मायकेँ सिनेहसँ कहिऐक, ओकर हाथ धऽ कऽ मना लिऐक।··· ओ पुनः जागल दृष्टिसँ देखलनि मनिञा मायकेँ, मने अपना पत्नीकेँ, मने रामवतीकेँ। ट्रेनक सहयात्री सभ औंघा रहल छल। दू गोटा अपनामे बतिया रहल छल। एकदिस एकटा ग्रामीण युवती छल आ ओकरा लगमे एकटा युवक··· दीनदुनिञास फराक, दुनू एक दोसराक मुस्कानक लूटिमे लिप्त। किछु-किछु गप्प कऽ कऽ भभा कऽ हसि दैत छल दुनू। युवतीक आँखिक निश्छल मादकता पीबि जाय चाहैत छल ओ युवक।

सामनेवला बर्थपर फुलपैंट आ बुश्शर्ट पहिरने एक युवक बेर-बेर नजरि बचा कऽ ओहि युवती दिस तकैत छल। ओकर नजरि युवतीक मुँह परसँ ससरि पीयर नूआसँ झाँपल छाती पर आबि कऽ पिछड़ि जाइत छलैक। हरिनाथक दृष्टि अपना पर पड़ैत देखि ओ बुश्शर्टबला युवक हकबका जकाँ गेल आ जेबीसँ 'चार मीनार' सिगरेटकेँ बहार कऽ माचिससँ जरा कऽ धूकैत खिड़कीसँ बाहर ताकऽ लागल।

हरिनाथो जोड़ी दिस सेहन्ता भरल नयने देखि लैत छलाह।

भसियाइत दीयर

रामवतीकेँ टोकबाक विचार करैत छलाह आ ओहि विचारकेँ हटा दैत छलाह। वस्तुतः लोक जखन ककरोसँ तामसमे झगड़ा कऽ कऽ बाजा-भूकी बन्द कऽ दैत अछि तँ पुनः ओकरा संग करबामे बड़ असौकर्य होइत छैक आ पहिल बेर टोकबामे बड़ साहसक काज पड़ैत छैक। हरिनाथ ओही तारतम्यमे छलाह। तारतम्यक एही झोंकमे एकबेर हुनका मुँहसँ अपन बेटीक नाम बहार भऽ गेलनि।

रामवती चौंकि कऽ ओमहर दिस तकलनि किन्तु हरिनाथ जीह कूचि कऽ बाहर दिस ताकऽ लगलाह। हुनक नजरि छन छन पाञाँ घूरल जाइत पर्वत मालापर छलनि आ मोन संगसंग चलैत रामवतीपर।

रामवती एकबेर चारूकात तकलनि। पतिकेँ अन्यमनस्क भावेँ आन दिस तकैत देखि भेलनि जे हमरे भ्रम भऽ गेल नै... ओ नै सोर कयलनि अछि, ओ सोर नै करताह, जिनगी भरिक जिद्दी छथि ने!

हुनको नजरि ओही युवक-युवतीक जोड़ीपर गेलनि आ एकेबेर सौंसे जीवनक इति कथा नाचि गेलनि...स्पृहा जागि गेलनि, जेना ई छौंड़ी उच्छृङ्खल भऽ कऽ गप्प करै छै तेना हम तँ कहियो गप्प नै कयलियनि। नै हम बड़ अनुचित करैत रहलियनि मनिञा बाबूसँ...आ एखनो धरि की ई जरलाहा स्वभाव

बदलल अछि ! सदिखन झझकारिये लै छियनि, जेना कुकुरमाछी लागल रहय·······।

रामवतीक आँखिक चिक्कन-चिक्कन दृष्टि पतिक मुखपर जा कऽ छहलि गेलनि···जेना हुनका सौंसे देह पर पसरि गेलनि। आब स्मृतिक सम्पत्ति बनल पतिक ओ चित्र मोन पड़ि गेलनि जकरा देखबा लेल राति-राति भरि जागि कऽ परात करैत छलीह। पतिक भरल मुँह, लाली भरल ठोरपर मुसकी, कान मे कनौसी, गराँ मे करिया बद्धी···आ आरो मारि किदन सभ मोन पड़ि गेलनि। मोने-मोन कतेक बात ने सोचि गेलीह— पुरुखेक तँ मोन थिकै, दूटा मधुर-मधुर, मीठ-मीठ बोल नै भेटतै तँ कोना रमतै ओकर मोन! कोना अनका घरक बेटीकेँ अपन बुझतै! तेँ ने सासु-पुतहुमे झगड़ा होइत रहै छै, कहियो सलाह नै रहै छै!

रामवतीकेँ मोन पड़ि गेलनि अपन पड़ोसीक घरैया झगड़ा आ ओ एकबेर अपने अन्तर्मनकेँ मथि कऽ देखऽ लगलीह।

कोनो स्टेशनपर गाड़ी रुकि गेलैक। ओकर धक्का खा कऽ रामवतीक विचार-तन्तु टूटि गेलनि। हरिनाथ उतरि कऽ कऽल पर गेलाह। बड़ भीड़ छलैक पानि लेनिहारक। कोनहुना कऽ एक लोटा पानि लऽ सकलाह हरिनाथ।

पानि आनि कऽ हरिनाथ नातिकेँ पियबैत पुछलथिन—

भसियाइत दीयर

बाउ, नानी पानि पीथुन ? कहुन पीबि लेबऽ लेल। मोटरी मे प्रसाद छै ने तँ फले कीनि दियनि।

नाति नानी दिस ताकऽ लागल।

हरिनाथ एकटा केरावलाकेँ सोर कऽ लेलथिन। मुदा तुरन्ते ओकरासँ गप्प करब छोड़ि कऽ रामदानावलाकेँ सोर कयलथिन—अय! रामदाना! इधर आना।'

एतबेमे बतिया बेचनिहारकेँ देखि ओकरो सोर कऽ लेलथिन।

--बाउ, हमर माथ दुखाइ अछि। हम नै किछु खायब-पीब। कहुन अपने पनिपियाइ कऽ लेबऽ लेल।' रामवतीक मोन होइ छलनि जे भरि छाक पानि पीबी। भरि लोटा उठा कऽ पीबि जाइ। मुदा मुँह खोलि कऽ पानि नहि माङि भेलनि। ओ नातिकेँ पुछलनि—तोँ किछु खयबेँ...?'

हरिनाथ एकटा रामदाना लऽ रहल छलाह मुदा फेर ओकरा बाकसमे धऽ देलथिन – नहीं लेना है जी!'

बतियावला कातमे ठाढ़ बकर बकर हिनकर मुँह तकैत रहनि किन्तु हिनक 'नहीं लेना है जी' सूनि कऽ आगाँ बढ़ि गेल। हरिनाथ बतियावलाकेँ सोरो ने कयलथिन।

रामदानावला सेहो निराश भऽ कऽ जाय लागल कि फेर सोर कयलथिन हरिनाथ—ऐ जी! एकठो दे दो।'

मिठाइ लऽ कऽ नातिक हाथमे धऽ देलनि आ पत्नीदिस व्यथा भरल आँखिसँ ताकऽ लगलाह। पत्नीक पियासक कल्पनाक तऽरमे अपन पियास पड़ि गेलनि। पति आ पत्नी दुनू चुप-चाप, गुम-सुम बैसल रहलाह आ एहि मौन स्तब्धताक भार नातिक उपर पड़ैत रहलनि। यैह स्थिति मोकामाघाट धरि बनल रहल, अखंड, अपरिवर्तित। एहनसन जेना हुनका दुहू गोटाक बीचमे खूब मोटसन मोटिया कपड़ा पसरि गेल हो।

जहाजपर चढ़बासँ पहिने बड़ मद्धिम आ कोमल स्वरमे हरिनाथ पुछलथिन—गंगाजल पीबि लेब? बड़ पियास लागल होयत!

—उहुँ, एहि पार मगहमे की जल पीब।' शरद्ऋतुक जल जकाँ निर्मल स्वर छलनि रामवतीक। जहिना हरिनाथक बोलीमे अस्वाभाविकता नहि छलनि तहिना रामोवतीक स्वर एकदम स्वाभाविक छलनि। जेना कोनो दर्पणपर पड़ल धूरा साफ भऽ गेल होइक।

जहाज परसं हरिनाथ धीर-गंभीर गंगाक फेनिल धारदिस निहारैत रहलाह। बीच-बीचमे उज्जर-उज्जर दीयर सभ चक-चक करैत आ ओहिपर ग्रीष्म ऋतुक थाकल-ठेहियायल सूर्यक किरण पड़ैत। ओ क्षण भरिकलेल चिन्तनमे पड़ि गेलाह—देखलनि, एकटा दीयर पर एकटा नाव फँसि कऽ एकोंस भेल सन पड़ल।

दोसर दीयरपर दुइटा नाव पाल खसा कऽ सुस्ताइत सन पड़ल। ओ दीयर सभ पाछाँ छूटैत गेलनि, जेना ओ सभ गंगामे भसि-याइत चलजाइत हो… ओ सोचऽ लगलाह…हमरो जीवन तँ धारे जकाँ अछि, कतेक दीयर अबैत रहल, दुइ किनारक बीचमे हमर नाव ओकरा सभसँ टकराइत-बचैत रहल। कतेक दीयर तँ एहनो भेटल जाहिपर क्षण भरिकलेल उतरि कऽ विश्राम कयलहुँ…।

आ रामवती आगाँमे बैसलि बुढ़िया कुजड़नीक मोटरी दिस तकैत रहलीह। मोटरीसँ बाहर भेल हुक्काक टोंटी आ ओहि पर राखल चीलम दिस तकैत रहलीह।… सोचैत रहलीह… कतेक दिनसँ ई चीलम हुक्काक संग रहल होयतैक! हुक्को-चीलम एकदम साँयें-बहुजकाँ छैक। हुक्का पर अपन सौंसे भऽर दऽ कऽ बैसल चीलम…' अपन कल्पना पर रामवतीकेँ हँसी लागि गेलनि। ओ नातिदिस ताकऽ लगलीह जे कोरमे बैसल पेड़ा खाइत छलनि।

…ता जहाज ओहिपार लागि गेलैक आ ओ हड़बड़ा कऽ ठाढ़ि भऽ गेलीह। ओ कुजड़नीओ अपन मोटरी माथपर लऽ कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि।

—लोकके उतरि जाय दियौक तखन उतरब।' हरिनाथ नातिके कोरमे लऽ बजलाह—दू-तीन घंटाक बाद गाड़ी फुजतै एहि ठाम सं।'

—तखन तँ गंगामे नहाइयो लितौं। कपलेसर बाबा लेल जल भरि लेबाक अछि।' रामवती बजलीह।

ओ सभ घाटपर अयलाह तँ उत्ताप कम भऽ गेल छलैक। शीतल बसात बहऽ लागल छलैक।

गंगाक कछेड़मे नातिके ँ मार्जन करा कऽ मोटापर बैसा देलथिन आ अपने हरिनाथ गंगामे पैसलाह। लगेमे बाम भागमे कुली, दोकनदार आ मलहवाक छौंड़ा सभ चुभकैत छल। खूब जोरसँ पानि फेकैत छल, से उड़ि-उड़ि कऽ हिनको देहपर पड़लनि। भरि डाँर पानिने ठाढ़ भऽ ओ छौंड़ा सभक घौंचलाबय आ जलक्रीड़ा देखैत रहलाह। नाङट वा धरिया पहिरने ओहि छौंड़ा सभक उन्मुक्त जल-बिहार देखैत नीक लगलनि। ओ सभ चुभकैत रहल, गबैत रहल, बजैत रहल—अइमे की ?

—पौड़की !

—फोड़य के ?

—हम-तोँ !......

—मीता ! अबै, हत्था-बाँही कऽ डूब दी।

—नै, हम ओहिना नहायब।

—हुँह, जते डुम्मी संग-संग देबही तते जनम संग-संग रहब। चल, आ...।

भसियाइत दीयर

—हँ, हँ, पहिने हम आ बलुआ हाथा-बाँही कऽ डुम्मी देब… ,

—हँ, एक… दू… तीन… '

हरिनाथ ओकरा सभक संगिता-जोड़ीक डूब गनैत रहलाह मुदा गनि नहि सकलाह। ततेक डूब ओ सभ लगौने जाइत छल जे ठीक-ठीक गनब पार नहि लगलनि। ओ रामवती दिस तकलनि। रामवती किनारमे गंगाक तटकेँ दुनू हाथसँ चारि-पाँचबेर जाँति देलथिन आ तखन ठेहुन भरि पानिमे बैसि कऽ स्नान करऽ लागलि छलीह।

—ओहि ठाम की नहाइ छी ? पनिगरमे आ कऽ नहाउने।' हरिनाथ पत्नीकेँ टोकलनि।

—बेसी पानिमे जाइत हमरा डऽर होइ अछि। कातेमे बैसि कऽ हम नहा लेब।' आ रामवती तरहत्थी सँ मुँह पोछऽ लगलीह।

—डर कथीक ? हमहूँ तँ एहीठाम छी। हमर हाथ धऽ लियऽ।' हरिनाथ अपन हाथ रामवती दिस बढ़ा देलथिन।

—नै, हमरा छोड़ि दियऽ एहीठाम।'

—अहाँक यैह स्वभाव बड़ अधलाह अछि।' हरिनाथ पुनः खौंझा गेलाह—जाउ, जे मोन हो से करू।'

ओ आगाँ बढ़ि कऽ पानि हिलकोरऽ लगलाह। बामभागमे

छौंड़ा सभ ओहिना हलकोर मचौने छल ··· एक डुम्मी—एक जनम, दू डुम्मी—दू जनम, तीन डुम्मी ··· चारि डुम्मी ···।

रामवती खौंझाइत पतिकेँ देखलनि ··· बहैत धारकेँ आ डूबि जयबाक लेल तत्पर रक्ताभ सूर्यकेँ देखलनि। ओ नहू-नहू पानिमे पैसि गेलीह आ अपना पतिक बाम भागमे आबि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलीह। पानिकेँ लाड़ैत-चारैत बजलीह—कहू, की कहै छी? एकेरत्तीमे मुँह फुला लेब ···।'

—झथीलेल आब एलहुँ, जाउ नहाउ कातेमे।' मुदा कहबाक मुद्रा कठोर नहि छलनि हरिनाथक।

—देखलहुँ जे सरकार आइ भरिदिन बगदले छथि।'

हरिनाथ अपन पत्नीक हाथ धऽ लेलनि, जेना कोनो यज्ञ कऽ रहल होथि, आ कि कोनो सत्त कऽ रहल होथि।

—एके संग डूब देब?'

—दियऽ ···'

—कतेक डूब?' हरिनाथ छौंड़ा सभदिस तकैत बजलाह।

—कतेक?' रामवती क्षणभरि रुकि गेलीह। पुनः ओहो ओही छौंड़ा सभ दिस तकैत बजलीह—बिना गननहि, जतेक मोन हो ततेक ···।'

आ धार बहैत रहल, ओकर दीयर सभ भसियाइत रहलैक। नौका सभ दीयर सभसँ टकराइत, बचैत, विश्राम करैत पाल तनने चलैत रहल आ छौंड़ासभ एक दोसराक बाँहि पकड़ि संग-संग डूब दऽ जनम-जनम केर संगी बनबैत रहल ··· बनबैत रहल ··· ···। * * *

भसियाइत दीयर

बड़-गाछक छाहरि

राति भरि बरखा होइते रहलैक आ भरिदिन मेघ घेरने रहलैक। कखनो-कखनो कऽ झीसी-फूही पड़ि जाइत छलैक। घेरियामे पच्छिम दिससँ मेघ फाड़लकैक तँ पूब दिससँ आरो घन - घटाव कयने उमड़ि अयलैक। हरही बड़ अगुता रहलि छलि—इह, हे भगवान्! कत्ते अन्हार भऽ गेलै। जाइत-जाइत मुनहारि साँझ भऽ जेतै।

एक बेर बिजुरी बड़ी जोरसँ तड़कलैक आ ओही संग हरहीक मोन हदरि गेलैक। ओकरा मोन पड़ि गेलैक अपन एकसरि बेटीक पीयर, दयनीय मुँह-ठान। ओ गोंहछैत जकाँ बाजलि—ए मानि, जे देब से दऽ दू। अइठाँ सँ फेर रामपुर जाइक अछि।'

ओकरा मोनमे फेर अपन मरनी बेटीक शिथिल गात बसि

गेलैक जे जे दिन ने पानि पाबि जाइक। ओकरा मुँहक धारी बला खाधि सभमे जेना मानसिक चिन्ता सभ टघरि कऽ चल अयलैक।

—गय, तोरा कदन्न कोना दियौक ?' हरहीकेँ जयबा लेल गोंहछैत देखि माञि बजलीह—सीधाक चाउर सठि गेलै। काल्हि फोलबै तखन ने। तोँ खाली हाथ कोना जेबेँ ? रमिञा कैँ पठौलिऐ पैंच अनैलय से ई बहुतरि छौंड़ी जाहि ठाम जाइ अछि ओहीठाम सटि रहै अछि।

—ए मैयो !' हरही एकदम व्यग्र छलि। छन-छनक देरी ओकरालय पहाड़ बूझि पड़ैत छलैक–देखियौ ने, पैलियोमे दूगो किछु छै तँ दऽ दियऽ। बिधे होइ छै की ? नञि लप्रभरि, मुठिएभरि।' एकेबेर ओकरा मोनमे नाचि गेलैक ककरो ओतऽ जयबासँ पहिने आयल आशाक टुकड़ी सभ—कोन-कोन वस्तु इनाम बकसीसमे भेटत। मुदा से कमेठाम भेटैत छलैक। नहि भेटलैक तँ ताहि लेल किछु बजितो ने छलि।

माञि उठि कऽ घर गेलीह। कोठुलीक खोधलीमे राखल तामामे चाउर तँ नहि चाउरक पैंचन अगिलोइ छलनि सैह लेने अयलथिन। हरही अपन खोञिछा पसारि देलक आ ओ आधपा खुद्दी आँचरक खूटमे बान्हि विदा भऽ गेलि झटकारने। ओकरा चिन्ता लेने छलैक रामपुरक—बेचारीक पहिलौठ बेटियो भेलै तँ··· आहा ! कतिञा कते लटुआ गेलै ?'

ओकरा सदिखन एहिना चिन्ता घेरने रहैत छलैक । देकुलीमे छलि तँ रामपुर जयबालेल छटपटाइत छलि, रामपुरमे डरहार जयबाक चिन्ता आ डरहार गेलापर बहादुरपुरक धन्धि ... चरारीक खोरबनमे अबैत - अबैत बुन-बुन बेसी होमऽ लगलैक । ओ दुलकी मारने चल अबैत छलि । महिसिक चरबाह सभ कम्मलक घोघी लगौने गाम पहुँचि गेल छल । एक पेड़ियाक दुनू कात छपरछैत्रा पानि आ ओहीमे वाँ- कँ करैत बेङ सब । निर्जनताक ध्वनि हरहीक पैरकेँ ठेलने जा रहल छलैक ।

बसातक एकटा झोंक आयल आ बाटक दुनू कातक मकैक खेत झरझरा उठल । अधपक्कू मड़ुआक ढेसर सब घौदा-मौदा भऽ कऽ जोड़ खेलाय लागल । कोम्हरहुसँ एकटा गीदर मकैक खेतमे पैसि गेलैक से खेतबाह सभ हाञि हाञि कनस्तर पीटऽ लागल । हारि हो ! करैत बाँसक फट्टा पीटऽ लागल ।

हरहोक सुरता गामपर चल गेलैक—जानि नञि, दाइ कोना होयत ? दरद होइत हेतै ।'

थोड़ेक दूर आबि कऽ ओकर मोन रामपुर दिससँ पैरकेँ मोड़ि कऽ घर दिस कऽ देलकैक । ओ घरमुहाँ भऽ गेलि—कनी गामपर साँझ दऽ देबै तखन जायब रामपुर.... ओह ! क्यौ किछु दै अछि नहिओ ने, अनेरे हक्कल पेड़ैत रहैत छी ।'

मुदा मोनक ई भाव छनो भरि ने टीकि सकलैक ।

छोटकी घर, ताहिमे बाँसक फट्टक लागल। ओ नहुएँसँ फट्टक खोललक। मरनी कहरैत छलैक।

—के छी ? माय ! कहाँ चलि जाइछेँ ? भरिदिन नपत्ता रहै छेँ। हमर परान जाइ अछि आ तोँ.... '

—यैह एलौं ...' कहैत हरही दोसर आङन चल गेलि। गोइठीपर आगि आनि फूकि कऽ डिबिया लेसलक। फेर बेटीक लग जा कऽ बड़ अहलादसँ पुछलकैक——दाइ कनी अबै छी रामपुरसँ भेल।'

मरनी एके बेर खिसिया उठलि। ओ तामससँ करोट फेरि लेलक आ वेदनासँ 'अँहँ अँहँ' करैत कहलकैक—जो ने, हमर कोन सोच ?'

—आहा हा ! जहिना अपन जिउ तहिना सभक बूझी। नूनू ने, अहाँ कनी आँच पजारू, ताबत हम दौड़लि अबैछी।'

हरही चलि देलक।

हजारो गोटाकेँ हरही दगरिन ठोंठमे हाथ देने होयतैक आ तैयो ओ ओहनेक ओहने। पातर-छीतर, कनेक गहुमी रंग। उजरा केशमे करिक्का केश फेंटल। डाँड़ कनेक झुकल। चमड़ी सभ सिकुड़ल।

लोक सभ जे किछु ओकरा दऽ देलकैक, ओकरा ताहीमे सन्तोख। क्यौ आध पा चाउर, क्यौ दूटा पाइ, क्यौ एकटा

उतरन देलकैक, हरहीक लेल वैह हजारक सम्पत्ति। बेटीमे कथीलय क्यो नीक जकाँ दितैक जे बेटो भेने ने दैत छलैक। दू आना-दस पाइ निछाउर सेर आधेक सीधा दऽ देलकैक, बस। हरहीकेँ ककरोसँ असन्तोष नहि।

रातिमे बौआ-टौआ कऽ हरही अबैत छलि तँ ओकरा फटलाहा मैल चिकाइट आँचरक खूटमे आध सेर-दस कनमा चाउर, दस-एगारहटा पाइ, दू गेठी हरदि बान्हल रहैत छलैक। एकटा मर्रा उजड़ल सूपमे उभीलि आँच जोड़ि खिचड़ि टुभकबैत छलि। खा कऽ टुटलाहा पटियापर फटलाहा बोरा ओछा कऽ पड़ि रहैत छलि। नहि, एही बीच जँ क्यो आबि जाइत छलैक तँ फेर भिनसरे कऽ घर अबैत छलि। एक रत्ती परिवत्त नो भेलैक तँ मरनी जहिया अयलैक तहियासँ ···।

ओहि दिन भीझल-तीतल नूआ लेने रामपुरसँ आयलि आ अङनाक फड़की खोललक तँ जी धक्क दऽ रहि गेलैक। घरमे मरनीक बच्चा 'केहों केहों' करैत छलैक।

—ओह, हम केहन निदरदी छी जे बेटीकेँ एसगरिए छोड़ि देलौं।' आ हबड़-हबड़ गोइठा जोड़लक, चूल्हिमे कनीटा चिनगी छलैक तकरा बीयनिसँ हौंकि-हौंकि कऽ घुड़ार कयलक। गोठुल्लामे एहि दिनुक लेल राखल गोइठा तीति गेल छलैक। कहुना घूड़ पजरलैक, सौंसे घर धूआँसँ भरि गेलैक।

बचाके सेद-माँड़ करऽ लागलि आ तखन मरनीक जाँत-पीच कयलक।

एतीकाल धरि ओकरा बकरी-दूधक सोहे ने छलैक। बचाक मुँह चटपटाइत देखि मोन पड़लैक तँ भरथा क्यौटक आङन ओती राति कऽ गेलि। भरथा-बहु गोंहछि उठलैक, ओकरा भेलैक जे फेर ककरो अनकालय दूध लियऽ आयलि अछि। मुदा जखन बुझलकैक जे मरनीके बेटा भेलैक अछि तँ ओकर सहानुभूति जागि उठलैक। ओ उठि कऽ दूध दूहि देलकैक।

—दूध की हेतै कपार'—भरथा बहु भनभना उठलि—भरि राति तँ पठरू सब मुँहे लगौने रहै छै। छिट्टा तरमे झाँपि दै छियै से तेहन बलगर सब जे छिट्टेके उनटा दै छै। कहुना चारि धार भऽ जाइ।'

भरथा बोहुक हाथसँ दूधक कटोरी लऽकऽ हरही आयलि आ बचाक मुँहमे धऽ देलकैक।

बच्चाके दूध दऽकऽ किछु तकबा लेल विदा भेलि की बाहरमे फड़की ठोकबाक अवाज कानमे पड़लैक। लालटेम लेने क्यौ सोर करैत छलैक। हरही चोट्टे घूमि गेलि आ फड़कीके खोलि देलकैक।

बाहरमे पछबरिया टोलक चन्नू बाबूक माय ठाढ़ि छलथिन, एकदम बूढ़-भुनकुट।

बट-गाछक बाहरि

चन्नू बाबू गामक नीक निविष्टक लोक। भाग्यिमे एकसर, आस्था सम्पन्न मुदा शून्य छलनि हुनक आङन-घर, दलान-खरिहान एकटा टेल्ह बिना। गामक सब वर्गक शुभकामना हुनका भेटल छलनि। दूधक दूध आ पानिक पानि कयनिहार एहन पंच कम्मे गामके भेटल होयतैक। चन्नू बाबू, चन्नू बाबूक माय, चन्नू बाबूक पत्नी सभक एकमात्र लालसा छलनि सन्तान! सन्तान!! सन्तान!!!

चन्नू बाबूक माय रुकमिन सुन्नरि हरहीके देखिते एकेबेर झहरि गेलीह। बुकौर लागि गेलनि। कोंढ़ फाटि गेलनि—गय! बच्चाक कल्ला बैसि गेलै ...'

—एँ !!!' हरही एके बेर चौंकि उठलि।

चन्नू बाबूक आशाक राहड़िपर जेना पाला पड़ल जाइत होनि।

भादव मासक अन्हरिया, टिपटिप बरिसैत पानि। भरि बाट थाल आ खोच ...। ठाम-ठाम पैर तरमे परैत बेङ। डेग-डेगपर साँप-कीड़ाक डऽर।

—जँउआँ छियै।' छने भरिमे हरही जेना किछु नौ छौ कऽ लेलक—अच्छा कोनो परवाहि ने। हमरा घरमे जँउआँक कनिञटा टुकड़ी बाँचल अछि, कहिया लय रहतै ई ?'

ओ घर गेलि। बाँसक टुटलाहा पेटारमेसँ एकटा गुदड़ी

कप्पा बहार कयलक, जेना एकदम ठेकनायल होइक तहिना। ओकरा एक खूटमे बान्हल गीरहकें खोलि जँउआँक टुकड़ी लऽ लेलक। ओकर ददिया सासु कोनो युगमे डोभावला बँसबिट्टीमे एकटा जँउआँ पकड़ने छलैक। वैह कतेक बच्चाक जान बचौलकैक अछि। कतेक नारीकें बच्चावती बनौलकैक अछि।

मरनीकें एकरत्ती कऽल पड़ि गेल छलैक। ओ आस्तेसँ फट्टक लगा कऽ दुआरिपर आयलि। माथपर टुटलाहा सूप औन्हि कऽ फड़कीकें जौड़सँ टेकि देलकैक आ भनभनाइत विदा भऽ गेलि—आइ-काल्हुक मगरमस्ती कनिञा सभ की गुदानै छै जे सोइरी-घर की छियै? ई बुझबे ने करै छै जे गोसाञिक मंडिलसँ बेसी नेम-टेम राखऽ पड़ै छै।' हरही गुनधुन करैत बाजलि—ए! कतौ, गोझनोट आर लागि गेल हेतै।'

—कहि नहि अनजानेमे चूकि भऽ गेल हेतै। आब तोंही जे कर गे दाइ ....' रुकमिनिसुन्नरि करुना करैत बजलीह।

हरही बाजलि—अहाँ घबड़ाउ नै काकी। ई दबाइ घसि कऽ चटा देबै, कनी निहुँछि-पिहुँछि देबै, जोग-टोन कऽ देबै, बस पपियाहा पड़ा जायत।'

चन्नू बाबूक नवजात शिशु घुटुर-घुटुर दूध पीबऽ लगलनि

तँ हरहीक करेज सूप सन भऽ गेलैक। जँउआँक अन्तिभो टुकड़ो एतेकटा उपकार कऽ सकल से बूझि अपार सन्तोख भेलैक ओकरा।

झोलफले छलैक। एखन कनेक बुनछेक जकाँ भऽ गेल छलैक मुदा रातुक बरखाक झमारल धरती आ भोर थाकल-ठेहियायल छलैक हरहीए जकाँ। हरही आबि कऽ फड़की खोललक ···। फट्टक फुजैत देरी सुनलक वेदनामय निश्शब्द क्रन्दन। ओ झमानसँ खसलि जेना। मरनी कोरामे बच्चाके लेने हिचुकि रहलि छलि।

—की भेलौ गे! गे बच्चाकेँ की भेलै?'

मरनीकेँ भेलैक जे भोकारि पाड़ि कऽ कानी मुदा हिचकैत बाजलि—कनी कुड़ूर करै लय बाहर गेलियै आ तकरा बादेसँ बच्चा दूध नै पीयै छै ···।'

—गे डकिनिञा! गे डकिनिञा! तोँ अन्हेर केलेँ ····।'
हरही एकेबेर चिचिया उठलि दुःखसँ। ओ हाञि-हाञि अपन पेटार खोललक, गुदड़ीकेँ उधेसैत गेलि ··· उधेसैत गेलि ··· खुरखुन्न कऽ लत्ता-पत्ताकेँ तकैत गेलि ··· तकिते गेलि। सौंसे घर गुदड़ी-चेथरीसँ भरि गेलैक। बूझि पड़ैत छलैक जेना ओकर छाती आ पेटक अँतड़ी सब बाहरमे उझिला कऽ छिड़िया गेलैक—। मुदा तैयो कनेकोटा जँउआँक टुकड़ी नहि भेटलैक जे मरनीक बच्चाकेँ जान बचा सकितय। नहि भेटलैक ··· नहि ··· नहि ··· नहि ···। * * *

दोहरी दीप

जखन साँझ कऽ आकाशमे हजारो-हजार तरेगन देखैत छी तँ मोन पड़ि जाइत अछि माधुरी। मोन पड़ि जाइत अछि माधुरीक ओ दीप जे सभ दिन हमरा चबुतरापर बारि जाइत छलि। मोन पड़ि जाइत अछि दीपक ओ टेम जे बसातक झोंकपर कँपैत रहैत छल आ माधुरी ओकरा आँचरसँ झँपने अबैत छलि। ओकर गुलाब सन लाल चेहरापर पड़ैत दीपक प्रकाश, पीताभ ज्योति तेहन ने रंग बना दैत छल जे ...।

जखन बसातपर हमर पत्ता सभ, टहुरी सभ काँपि उठैत अछि तँ हमरा सन्देह भऽ उठैत अछि जे माधुरीक आँचर तँ ने फहरा रहल छैक।' ओहि बसात आ हमर पात सभक संयोगसँ जे एकटा स्वर बहार होइत छैक, से मोन पड़ैत अछि

जेना माधुरीक साँस चलि रहल हो। हम कतेक बेरने ओहि साँसक स्वर सुनने छी। ओकर साँसक गरम-गरम भाफ हमरा देहकेँ स्पर्श कयने अछि।

ओ हमर देह धऽ कऽ ठाढ़ि रहय। ओकर कोमल-कोमल हाथक पिउर सनसन आङुर, तूरक फाहा सन गाल हमरा देहस सटल रहैक। ओ हमरा टोकैत बाजलि छलि—हे धातरी! एहि गरूसँ उबारबह तँ तोरा दोहरी दीप देखयबह।'

हमरा मोने अछि, ओकर आँखि सिम-सिम भऽ गेल छलैक। ओकर तेजीसँ चलैत गरम-गरम साँस हमर धड़केँ छूबि-छूबि कऽ निखिल वायुमंडलमे विलीन भऽ रहल छलैक।

ओहि दिन साँझमे कतेक कालधरि ने हमर डहुरी धयने ठाढ़ि रहलि। ओकर दीप जरि रहल छलैक। दीपक बातीकेँ उसका देलकैक। टेम एके बेर भुक-भुका कऽ तेज भऽ गेलैक। थोड़ेक कालक लेल प्रकाशक जे परिधि छलैक से बढ़ि कऽ बड़ी दूरमे पसरि गेलैक आ ओही परिधिमे माधुरी समटा गेलि। मुदा फेर ज्योति मद्धिम भऽ गेलैक। माधुरी अन्धकारमे पड़ि गेलि। ओहीमे विलीन भऽ गेलि से फेर हम ओकरा देखि नहि सकलिऐक।

माधुरी हमर खसाओल कतेक धातरीकेँ बीछि-बीछि कऽ खोन्छिमे लऽ गेलि होयत। चटनी बना कऽ लोककेँ

खुआौने होयत। हमरा छायामे कतेको बेर ने ओ अक्षय नवमी दिन भानस–भात कयने होयत। आब तँ हमर फड़बे व्यर्थ लगैत अछि। ठाढ़े रहब व्यर्थ बूझि पड़ैत अछि। तथापि छी जे कदाचित, कहियो नहा कऽ अबैत काल एक लोटा अछिंजल हमरा जड़िमे दऽ दिअय। जुग-जुगसँ पियासल अछि हमर मोन, हमर आँखि।

माधुरीक राखल माटिक दीप सभक ढेरी थोड़ेक दिन धरि ओहिना रहल। फेर ओहिपर पानि पड़लैक तँ सभ गलि कऽ माटिक थिम्हा मात्र रहि गेल। आ आब··· तँ ओ सभ भसिया कऽ चल गेल छैक। सभ माँटि सौंसे धरतीपर पसरि गेल छैक। ओहि ठाम माटिक ढेरियो छलैक से ओकर आब थाहो-पता नहि छैक। मेटा गेलैक, समाप्त भऽ गेलैक।

मुदा ओकर स्मृति नहि मेटा सकल अछि। ओ मेटाइयो नहि सकैत अछि। माधुरीक चित्र हमरा मोनपर हमर देह पर, पात-पातमे अंकित भऽ गेल, से जेना अजर - अमर अछि। जेना हमर प्रत्येक पत्तीपर माधुरीक रंग पसरि गेल छैक। ओ जे साँझ कऽ नचारी गबैत छलि से स्वर जेना ओहिना कखनो-कखनो कऽ सुनैत छी। एमहर–ओमहर तकैत छी, संभवतः माधुरी होयत। मोन पुलकित भऽ उठैत अछि। ओ दीप लेने अबैत होयत··· धातरी बीछऽ अबैत होयत··· हम बाट तकिते रहि

जाइत छी, ओ नहि अबैत अछि ··· नहि अबैत अछि। कहियो ने आयलि, आब कहियो ने आओति।

अन्तिम दू दिनुक ओकर मुखाकृति बिसरल नहि जाइत अछि। ओ अन्तिम दर्शन छल ओकर। यदि से जनितहुँ जे ओ आब पुनः नहि आओति, नहिञो आओति, तँ हम ओकरा अपनामे समेटि लितिऐक सदा सर्वदाक लेल··· मुदा हम से पहिने कहाँ बुझलिऐक। ओ दीप लऽ कऽ नहि आयलि। हम अन्हारेमे साँझ बितौलहुँ। हमरा जीवनमे ई पहिले घटना छल। दोसर दिन पुनः दीप लऽ कऽ आयलि तँ हमर आँखि हमर मोन तिरपित भऽ गेल।

माधुरो आँचर तर दीप झँपने छलि। ओकर छाती धड़कैत छलैक से ओहिना बूझि पड़ैत छल। हाथ काँपि रहल छलैक, साँस तेजीसँ चलि रहल छलैक। हमर देह सिहरि उठल, आत्मा काँपि उठल। हमर शाखा सभ अकस्मात् डोलि गेल। ओकर चेहरापर विषादक सघन बादरि पसरि गेल छलैक, नयनसँ एकाध बुन्न पानि बरसि जाइत छलैक मुदा ओकर आँचर ओहि बुन्नकेँ सोखि लैत छलैक।

ओ हमरा धऽड़केँ धऽ कऽ बड़ी जोरसँ झमोड़ि देलक। ओहिसँ ओकरे देह झमोड़ा गेलैक। फेर ओ झुकलाहा डारिकेँ गहिया कऽ पकड़ि लेलक आ आवेशमे आबि कऽ बाजऽ

लागलि—धातरी ! धातरीक गाछ ! तोरासं आइधरि किछु नहि मङलियह, मङबो नहि करितियह मुदा··· ,

ओकर गऽर बाझि गेलैक। ओ रुकि कऽ फेर बाजलि—आइ मङै छियह, बाजह, बजै छह किए ने ? तोँ सतजुगक गाछ भऽ जाह कलपतरु भऽ जाह आ हमरा आँचरकेँ सोना-सोवर्णसँ भरि दयह··· बड़ गून गयबह··· जिनगी भरि नहि बिसरबह तोहर ई उपकार। दोहाइ धातरीक छह··· ,

ओ आँचर पसारि देलक, मुदा हम सतजुगक गाछ नहि भऽ सकलिऐक, कलपतरु नहि भऽ सकलिऐक। ओकरा आँचरमे हम किछु ने दऽ सकलिऐक। देलिऐक दू-चारिटा पात, धातरीक पात मात्र··· ।

ओ जखन फीरऽ लागलि तँ ओकर चरण श्लथ छलैक। ओ फीरि गेलि खाली आँचर लेने, खाली मोन आ विषादसँ भरल हृदय लेने। विवशता जेना ओकर पयर छनने जा रहल छलैक ।

केहन छलैक ओकर वर ! केहन छलैक ससुर आ सासु !! जकर मोन भरबाक लेल माधुरीक पिता अपन सभ किछु झोंकि देलक। मुदा तैयो··· तैयो माधुरीकेँ ओकर वर अंगीकार नहि कयलकैक। सम्पत्तिएकेँ सभ किछु मानि माधुरी सन अनमोल रत्नकेँ फेकि देलक छाउड़क ढेरीपर, मोड़ीमे, घरक कोनटापर, बाँसक बीटमे की पोखरिक बाहापर।

अन्तिम दिन, हमर इतिहासक अन्तिम पृष्ठ,··· तकरा बाद जेना हमर कोनो इतिहासे ने रहि गेल। ओहि दिन माधुरीक सीमन्तमे सिन्दूरक रेखा अत्यन्त जग-जगार छलैक। पुष्ट कऽ सिन्दूर लगाओल छलैक से लगैत छलैक जेना दीपक पनारि होइक। माधुरीक हाथमे दीप आ माथपर पनारि सन सिन्दूरी रेखा देखि सन्देह भेल छल जे ओ दोहरी दीप तँ ने लेने अबैत अछि! मोन हुलसि गेल—माधुरीक मनकामना पूर भऽ गेलैक!

······मुदा दीप एकेटा छलैक। माधुरी कहियो दोहरी दीप नहि देखा सकलि। ओहि दिनुक बाद तँ ओ एकोटा दीप ने देखा सकलि। हमर चारू कातक चबुतरापर साँझ कऽ भग्ह पड़ैत रहैत अछि। अन्धकारक कालिमाकेँ चीरि कऽ हटा देबाक लेल मोन आकुल भऽ उठैत अछि। आ सोर कऽ उठैत छी··· मधु··· मधूर··· माधुरी ··। हमर स्वर पोखरिक पानिक लहरिपर जा कऽ डूबि जाइत अछि। ओहि पिपरक पातक झोंझमे जा कऽ ओझरा जाइत अछि। विशाल देवालयक भीतसँ टकरा कऽ चूर्ण-विचूर्ण भऽ जाइत अछि मुदा माधुरीक स्वर नहि सूनि पबैत छी। भ्रममे थोड़ेक कालक लेल सान्त्वना भेटैत छैक मुदा आब माधुरीक स्वर, ओकर पयरक आहटिक भ्रमो ने होइत अछि।

होइत अछि जे धातरीक इ गाछे ने छी। तेँ ने दीप नहि जरैत अछि आ कालिमाक जलसँ सतत नहायल रहैत छी! * * *

पियासल ठोर

ओछाओनपर मनहूस पड़ल बिसुन चार दिस ताकि रहल छल। खुट्टीमे लटकल लालटेमक मद्धिम प्रकाश, घरमे पसरल अन्धकारक संग मिश्रित भऽ कऽ पसरल छलैक। निराशाक विराट अन्धकार मोनकेँ कोने-कोन भरि देने छलैक। निन्न जेना आँखिसँ हेरा गेलैक। डाक्टर आराम करबाक परामर्श देने छलैक। जानि नहि, मास, दू मास, चारि मास, छौ मास पहिना आराम करऽ पड़तैक।

डाक्टर बुझा कऽ कहने रहैक जे आरामक माने ई नहि जे काज नहि करैत छी, आरामक माने ई नहि जे ओछाओनपर पड़ल छी आ ओंघरा रहल छी। आरामक माने ओछाओनपर

जेना पड़ल छी तहिना पड़ल रहू, करोटो नहि फेरू। मोनसँ सोचू नहि।

मुदा से मुदा जकाँ पड़ल पार नहि लगैत छलैक बिसुनके । चित्त पड़ल-पड़ल पीठ दुखा गेलैक तँ करोट भऽ गेल। सामने, नीचाँमे पटियापर सतरंजी ओछा कऽ सूतलि पत्नीपर दृष्टि गेलैक। पत्नीक छातीसँ सटि कऽ सूतल तीन बरखक बेटापर नजरि गेलैक।

मोन करुणासँ भरि गेलैक बिसुनक। पत्नीक चेहरापर पसरल विश्रान्ति देखि बड़ ममत्व भऽ गेलैक। सूतलि पत्नीक ठोरपर जा कऽ नजरि अटकि गेलैक। बूझि पड़लैक जेना ओ ठोर अपन अतृप्तिक कथा कहबाक लेल आतुर भऽ उठल होइक। अपन विवशताक झलक जेना ओहि ठोरमे दृष्टिगोचर भेलैक बिसुनके । तखने बच्चाके ढ़ीस कि मच्छड़ कटलकैक से ओ कुनमुना उठलैक।

बिसुनके भेलैक जे ऊठि कऽ चद्दरि ओढ़ा दिऐक, मुदा उठल नहि। आसकति भेलैक आ डाक्टरक चेतौनी मोन पड़ि अयलैक—अनावश्यक चलब-फिरब घातक होयत।

बिसुनक सीरममे टार्च राखल छलैक। अनेरो टार्च बारबाक मोन भेलैक। ओ टार्च लऽ कऽ अपन पत्नीक मुँहपर देलकैक। बूझि पड़लैक, जेना कोनो ओरहुलक फूल मौलायल

जाइत होइक—माथपरक सिन्दूरक रेखा खूब गाढ़ छलैक, तथापि बिसुनकेँ ओ क्रमहि मलिन होइत बूझि पड़लैक। ओ टार्च पत्नी आ पुत्रक मुहपर देनहि रहल। बूझि पड़लैक जेना स्नेहक धार बहल जाइत होइक।

बच्चा कुनमुनायब फेर सुरू कऽ देलकैक। पत्नी औंघायलेमे बच्चाकेँ लग घीचि कऽ छातीमे सटा लेलकैक आ ठोरसँ ठोर सटा कऽ कहऽ लगलैक—चुप रहू, चुप रहू बौआ !' कहैत-कहैत ओकर ठोर निःस्वर थरथराय लगलैक।

बिसुन पत्नी आ बच्चाक ठोर सटैत देखि अत्यन्त सीदित भऽ उठल। व्यथाक भारसँ जेना दबि गेल।

बच्चाकेँ ओकरे लग सुतबाक अभ्यास छलैक, मुदा जाहि दिनसँ दुखित पड़ल ताहि दिनसँ मायक लगमे सुतबाक अभ्यास लगयबामे कतेक परिश्रम करऽ पड़ल छलैक। रातिमे सुतबा काल एक नोर कऽ कानि कऽ सुतैत छलैक। बच्चा जबरदस्ती बिसुन लग आबि कऽ सूति रहैत छलैक। जिद ठानि दैत छलैक—नै, हम बाबूजी लग सूतब।

बिसुन आ ओकरा पत्नीकेँ घंटा-घंटा भरि लागि जाइत छलैक ओकरा पोल्हयबामे।

बिसुनकेँ बच्चाक गालपर नोरक टघारक आभास बूझि पड़लैक। ओ टार्चक फोकस माय-बेटा दुहूक मुँहपर दऽ कऽ

देखलक। औखन ओकर पत्नीक गाल बचाक गालसँ सटल छलैक।

बिसुनकेँ वेदना होइत छलैक अपन कठोरतापर। वस्तुतः अपन बचाक प्रति कतेक कठोर आ क्रूर भऽ गेल ओ। तीन बरखक बेटाक प्रति कयल अपन व्यवहारपर आँखि सिमसिम भऽ गेलैक। मोन पड़लैक जे ओकर बेटा भरि पेट खाइतो ने छैक। विचित्र सन अभ्यास छलैक जे जखने बिसुन खाइत छल तखने ओहो खाइत छलैक आ सेहो एके थारीमे। जावत अपने हाथेँ बिसुन खुअबैत नहि छलैक तावत ओ खाइत नहि छलैक। ईहो नहि जे अपने नहि खाय आ बचाकेँ खुआ दैक। बच्चा आपठ खसा दैक—नहि, अहूँ खाउ आ हमरो खुआ दियऽ।"

मुदा आइ कैक दिनसँ बिसुन मोन मर मसि कऽ रहि जाइत छल—डाक्टर मनाही कऽ देने छलैक जे अहाँक एँठ क्यो खाय नहि।' पत्नी कहीं ओकर एँठ जानियो बूझि कऽ खा ने लैक तेँ ओ थारियेमे हाथ अँचा लैत छल। ओहि दिन भरल बाटी दूध छलैक, मुँह लगा देने छलैक, मुदा पीबाक इच्छा नहि भेलैक तँ ओ ओही दूधमे लोटो भरि पानि उझीलि देलकैक।

मुदा बालहठसँ निवारणक कोनो बाटे ने ओकरा सूझैत

छलैक। ओ तीन बरखक बेटा दुइयेटा विकल्प दैत छलैक, की तँ बाबूजीक संग खायब आ नहि तँ नहि खायब। जबरदस्ती बिसुनक संग थारीपर बैसियो गेलैक। उपाय नहि देखि कऽ बिसुन एक चाट मारि बैसल छलैक। प्रायः तीन बरखक जीवनमे पहिल चाट लागल छलैक। चाट खा कऽ भरि दिन हिचकैत रहि गेलैक। रातियोमे बिनु खयनहि सूति रहल छलैक। आ स्वयं बिसुन भरिदिन अनमनायल सन उदास पड़ल रहल छल। कैक बेर पत्नी कहने छलैक जे कथी लेल एना मोन छोट कयने छी? पित्त-तामसमे एहिना धीया-पुताकेँ लोक लगा दैत छैक की ओकरो दिनक दोख छलैक।

बिसुनक उदासी नहि गेलैक तैयो। भरि दिनमे एकोबेर ओ तीन बरखक नेना ओकरा लग नहि अयलैक। ओकरासँ दुलारक स्वरमे नहि कहलकैक—बाबू जी! लेमनचूस कखन आनब? बिस्कुट नै आनि देब?

बिसुन पुनः टार्च बारि कऽ पत्नीक छातीस सटल अपन बेटाकेँ देखलक। पत्नीक एकटा बाँहि बच्चाक माथतर छलैक आ दोसर बाँहि पीठपर। बूझि पड़लैक, जेना पत्नीक शरणमे बेटा नुकायल छैक आ बेटाक शरणमे ओकर पत्नी।

मोन पड़लैक बिसुनकेँ, कतहु बाहरसँ अबैत छल तँ बेटा दौड़ि कऽ लुधुकि जाइत छलैक। ओकर ठेहुनमे लटकि कऽ

झूलऽ लगैत छलैक। कहऽ लगैत छलैक—बाबूजी! दुलार! बाबूजी! दुलार!

बिसुन ओकरा बड़ी जोरसँ कुदा कऽ लोकि लैत छलैक आ कोरमे लऽ कऽ ओकरा ठोरकेँ चूमि लैत छलैक। जेबीसँ टाफी की लेमनचूस वा आने कोनो मधुर बहार कऽ एकटा मुहमे आ एक-एक टा दुनू हाथमे दऽ दैत छलैक।

वस्तुतः पहिने बिसुन अपने बजा कऽ कहैत छलैक—आउ ताँ बाउ! अहाकेँ दुलार करू।'

आ ओ नेना दुलारक यैह अर्थ बुझैत छल। मुदा कतेक दिनसँ बिसुन ओकरा दुलार नहि कऽ सकलैक। ओ एकदिन नेना अकच्छ भऽ बिसुनक कोरामे बैसि गेलैक आ कहऽ लगलैक—बाबूजी! दुलार! बाबूजी! दुलार!' आ ई कहबाक जहनि लागि गेलैक।

बिसुनकेँ मुदा मोनमे डाक्टरक कथ्य भम्होरैत रहलैक—इनफेक्सस डिजीज! सतर्क रहब! बच्चासभकेँ मुँहपर चुम्बन नहि लेबैक।'

आ ओ अपना बेटाकेँ दुलार करब छोड़ि देने छल।

अन्तमे बच्चा बिसुनक मुँह लग मुँह सटा कऽ कहलकैक-'बाबूजी! दुलार! बाबूजी! दुलार!'

बिसुन तमसा गेल आ झमोड़ि कऽ बेटाकेँ हटा देलक।

बेटा छन भरिलेल तँ ठकुआ गेलैक। अकस्मात् ओकर भावना-कमलक कोंढ़ीपर पाला पड़ि गेलैक जेना। पुनः ओकर ठोर बिफुकऽ लगलैक। छन भरिमे ओ चीत्कार मारि कऽ कानऽ लगितैक कि बिसुनक पत्नीक नजरि ओकरापर पड़ि गेलैक आ झटसँ कोरा कऽ उठा लेलकैक।

ओहि दिनसँ छौंड़ाक मुँहसँ दुलार शब्द जेना हेरा-भुतिया गेलैक। बिसुनकेँ सेहन्ता होबऽ लगलैक जे ओकर ओ अबोध बेटा ओकरा पैरपर नहियोँ भूलि कऽ ओकरा लग आबि कऽ दुलारक लटारम्ह करितैक। मुदा ताहिसँ ओ एकदम वंचित भऽ गेल।

बिसुन अनुभव करैत छल जे ओकरे संग ओकर बेटा आ पत्नियोकेँ बहुत किछुसँ वंचित होबऽ पड़लैक।

बिसुनक मोन आतुर भऽ उठलैक। ओ पड़ल नहि रहि सकल। नहू-नहू ओछाओनपरसँ उतरि कऽ लालटेमक बत्तीकेँ तेज कऽ देलकैक आ अपन पुत्र आ पत्नीक सीरममे आबि कऽ बैसि रहल। अपन पत्नी आ पुत्रक मुखक अत्यन्त निकट आबि गेल छल ओ। अपन मुँह झुका लेने ओ निकटता आरो बढ़ि गेलैक।

बिसुन अनुभव कयलक जे एहि बीचमे कतेक दिनसँ ई निकटता ओकरा नहि भेटल छलैक। ओकर आतुरता, ओकर

ठोरक पियास बढ़िते गेलैक ·· बढ़िते गेलैक। चुम्बन लेबाक लेल अधीर भऽ उठल ओ। अन्ततः झुकिये गेल····झुकिये गेल····।

अकस्मात् जेना पुनः कोनो चेतना जागि गेलैक। ओ अपन मुँहके बड़ी जोरसँ छीपि लेलक। जेना कोनो पैघ अपराध करऽ जाइत-जाइत सज्ञान भऽ गेल हो।

ओ छनभरि रुकि पत्नी आ पुत्र दुहूक मुँह बेराबेरी कऽ देखऽ लागल। पुनः दुनू हाथें दुनूक माथक केश सोहराबऽ लागल। ओहिसँ किछु तृप्ति जकाँ भेलैक। ओ फेर अपन आङुर पत्नीक ठोरपर आ बेटाक ठोरपर रगड़ऽ लागल। बिसुनकें ओहिसँ अपन ठोरक पियास तृप्त होइत बूझि पड़लैक।

किन्तु तैयो ई बात बिसरि नहि सकल जे ओकर पत्नी आ पुत्रक ठोर तथापि पियासल रहि जयतैक। आ यैह सोचि कऽ तृप्त होइत पियासल ठोर पुनः अतृप्त भऽ गेलैक। ***

दुतियाचान : तुलसीदल

दुनूक मोन औना रहल छलैक किछु बजबाक लेल, किछु गप्प करबाक लेल, किछु बतिययबाक लेल। होइत छलैक जे कोनो एहन बात भऽ जाय जाहिसँ दुनू गोटा एकेबेर खिलखिला कऽ हँसऽ लागी आ फेर एक दोसराक मुँह ताकऽ लागी। दुनू गोटाकेँ एक दोसराक दिस तकबामे संकोच होइत छलैक जे तकियैक आ कहीं बूझय जे हमरा डिठियबैत अछि!

श्रीमाली बाबूक मकानक मुरेड़ापर ठाढ़ि भेलि सोमा आ नीरा नीचाँ दिस हुलकी दऽ रहलि छलि। मकानक उतरबारी कातक कुजड़ाक खेत चारू कातसँ बबूर, बङलिया, अमती आ पनिभौलाक काँटसँ बेढ़ल। दुनू मौन भऽ कऽ ओहि खेतके देखैत रहलि; लहलहाइत सजमनि, घेड़ा आ भिङनीक लत्ती।

भरि-भरि छातीक रामझिङ्नीक ढकनायल पात सभ। सौंसे उज्जर-पीयर फूल सभ पसरल। एक दिस पाँतीजोड़सँ भाँटा आ दोसर दिस फुलकोबी रोपल। दुनूक पतियानी सभ बेश नीक लगैत छलैक देखबामे।

सोमा आ नीरा खाली तकैत रहलि। जेना ताकब छोड़ि आर कोनो काजे ने बचल होइक। कोनो गप्पे ने बचल होइक। गप्प करबा लेल कोनो विषये ने रहल होइक।

सोमा ओहि टोल परक निवासी छलि तेँ ओकरा लेल कुजड़ाक खेतक जजाति, करीन आ ढेकुल, पानिसँ भीजल पौटी—कोनो वस्तु आकर्षक नहि छलैक। ओकरा लेल नवीन छलैक नीरा। सर्वथा नवीन। सात-आठ दिन पहिने ओकरा टोलमे श्रीमाली बाबूक मकानमे आयलि छलैक।

···सोमा एक बेर नीरा दिस देखलक। नीरा हरियर रंगक साड़ी आ माथमे नाइलोनक पीयर रीबन लगौने छलि से सोमाकेँ बड़ नीक लगलैक। भेलैक जे ओकरा दिस तकिते रही ··· तकिते रही···· ओकरा अपन दृष्टिक परिधिमे समेटिली। नजरिक पाँजमे राखिली। मुदा संकोचेँ ओ बेसी काल धरि नीरा दिस ताकि नहि सकलि।

ओकरा आँखिमे नीरा दूधक उधियान जकाँ उधियाइत रहलैक। बूझि पड़लैक जेना नीरा छोट-छोट फाहा भऽ गेलि।

ओकरा मोनक आकाशमे सिमरक तूर जकाँ असंख्य भऽ कऽ उमड़ऽ लगलैक। चारू कात नीरा··· नीरा ··· नीरा··· ।

नीरालेल ई टोल नवीने छलैक। जे किछु देखैत छलि, सभमे एकटा आकर्षण जकाँ बूझि पड़ैत छलैक। प्रत्येक वस्तुक बिम्ब उतारैत-उतारैत सोमा लग आबि कऽ ओ अँटकि जाइत छलि। मोन चारू भर छिड़िया जाइत छलैक। पसरि जाइत छलैक।

ओहि दिन नीरा सोमाक आङन गेलि छलि तँ सोमा अन-चिन्हारो रहने हलसि कऽ बैसऽ लेल आग्रह कयने छलैक। सोमा ओकरा हृदयमे गड़ि गेलैक, जेना भरल छाँछ दहीमे ऊपरसँ मिसरीक ढेप खसि पड़ल होइक। जेना ओ मिसरीक ढेप गलि कऽ दहीमे मीलि गेल होइक; तहिना सोमाक मिठास ओकरा तन-मनमे पसरि गेलैक, मीलि गेलैक।

नीरा अनायासे सोमाकेँ हकार दऽ देलकैक—कालिह हमरा डेरा पर आउ ने ··· ।'

—ह हँ, जरूर आयब।' सोमा सेहो सकारि लेलकैक। नीराक आमन्त्रणसँ पहिनहि स्वीकृतिक भाषा सोमाक ठोर पर आबि गेल छलैक।

आ परात भेने नीरा आ सोमा लगे लग ठाढ़ि छलि। ओकरा दिमागमे सोमाक कालहुक साधारण चित्र तखन असाधारण

भऽ कऽ उमड़ि रहल छलैक। ओहि चित्रक एक-एक रंग-टीपकें गहिकी नजरिसँ परेखबाक प्रयास करैत छलि नीरा आ तें बड़ी काल धरि एकटा निरीह चुप्पी पसरल रहलैक।

ओकरा ई चुप्पी, ई स्तब्धता, ई गुमसुम वातावरण बड़ अधलाह लगलैक। ओकर भावनाक देहकें जेना नोचऽ लगलैक। नीराकें भेलैक जे सोमाकें अपना ओहिठाम बजा कऽ अपमान तँ ने कऽ देलियै!

ओ चिहुँकि उठलि आ मौनक धनुष तोड़ैत बाजलि—अहाँक भैया हमरा बाबूजीक दोस्त छथिन। वैह ई कियाक मकान ताकि देलथिन।'

—के इन्नू भैया? हमरो सभकें कहने रहथि।' सोमा उत्तर देलकैक।

—ओ अहाँक भाइ नहि थिकाह की?

—उहुँ, सोमा माथ डोलबैत बाजलि—हमरा अपन भाइ कहाँ अछि? ओ तँ पितियौत भाइ छथि। हम तँ दू बहीन छी आ माय, बस।'

—ओ!!' एकटा नामसन स्वर मुँहसँ बहार भेलैक। ओ पछताइत सन भऽ गेलि। मोन उदास भऽ गेलैक। सोमाक भ्रातृहीनता मोन पाड़ि कऽ बड़ पैघ पाप कऽ गेलि तेहने सन बूझि पड़ैत छलैक नीराकें। ओ सोमा दिस तकलक आ

सोमा दोसर दिस तकैत छलि। बातचीतक ठेला गाड़ी रुकि गेलैक।

फेर वैह संत-मंच मुद्रा, वैह भरियायल सन मोन, वैह छौ-पाँचक तानी-भरनी ... तारतम्यक सोमारमे ओझरायल एक विचित्र प्रकारक विचार-तन्तुक पसार दुनूक मोनमे भऽ गेल छलैक। चारू कातक वातवरण जेना गाल फुला लेने हो।

दछिनबारी कात सोमाक संग आयल टोल परक धीया-पुता सभ अपन गंगा-जमुना तड़पौअलि' खेलमे लागल छल ... मगन छल ... तृप्त छल। दूटा छोटकी छौंड़ी धरतीपर पाड़ल चिरचीरीसँ दूर हटि कऽ ठाढ़ि छलि। दुनू कनफुसकी कऽ रहलि छलि। बुझि पड़ैत छलैक जेना कोनो समस्यासँ युद्ध करबाक योजना बनबैत हो। नीरा आ सोमा दुनूक नजरि बेर-बेर ओहि जोड़ीपर चल जाइत छलैक। ओ दुनू गोटाक अबूझ मनक भाषाक आदान-प्रदानक माध्यम भऽ गेल छलैक।

सोमा आ नीरा दुनू मौन छलि। टुकुर-टुकुर तकैत मात्र छलि। आगाँ खेतमे लत्ती, एक कातमे खेलाइत धीया-पुताक जेर, दोसर कात दुनू छौड़ीक जोड़ी ... सभ दिस चुम्बकीय शक्तिक रेखा बूझि पड़लैक जे एक दोसराकेँ अपना दिस खिचने जाइत छलैक। सोमाक आँखि नीराक केशारसँ छहलैत रीबनपर अटकि; झलमल करैत कीमती साड़ीपर अबैत छलैक

आ तखन पयरमे सटल चप्पलपर रुकि जाइत छलैक। नीराक दृष्टिमे अबैत छलैक सोमाक थकड़ल मुदा रुच्छ केश, उज्जर मुदा मसकल साड़ी ··· ठाम-ठाम सीयल।

सोमाक मोनमे कोनो प्रकारक नाप-जोख चलि रहल छलैक। अपन पछिला संगी-बहिनपा सभक बटखारापर नीराकेँ तौलबाक चेष्टा कऽ रहलि छलि। ओ संगी सभ जे बड़ स्नेहसँ लऽग अयलैक वा बजौलकैक आ थोड़बेमे आक्रोश ओ अभिमानक संग 'पेक्षा-तिरस्कार दऽ दूर हटि गेलैक, ने तँ एकरे दूर ठेलि देलकैक। सोमाकेँ मोन पड़ैत गेलैक जे के कोन प्रयोजनसँ हमरा बहिनपा बनौलक आ एखन एक बेर कनडेरिओ ने तकैत अछि।' मोन पड़लैक एखनुक सखी सभ—सभकेँ कोनो ने कोनो काज एकरासँ छलैक। ककरो स्वेटर सिखबाक छलैक तँ ककरो सुजनी सिअयबाक। ककरो फूलक डिजाइन बनयबाक छलैक तँ ककरो नीक-नीक गीत सिखबाक।

नीराक निश्छल चेहरासँ किछु आभास सोमाकेँ नहि लागि रहल छलैक। फेर ध्यानपर अयलैक जेना ओ स्वयं नीरा दिस बहल चल जा रहलि अछि। किएक, तकर उत्तर पयबा लेल औनाय लागलि।

कहि नहि, नीरा अथवा सोमामेसँ ककरो दृष्टि खेतमे

बबूरक काँटपर लतरल सजमनिक लत्तीपर गेलैक की नहि। सोझाँ-सोझी दूटा मूड़ी बढ़ल चल अबैत छलैक सापक फन जकाँ। ओकर सूँघ सब किछु हिंप्रग जकाँ नुड़िआयल आ किछु बन्सी जकाँ घूमल।

निश्चेष्ट, नीरव वातावरण भारी लगैत छलैक। सोमा वातावरणक पानिपर पसरल निश्शब्दताक कदैकें टारैत बाजलि—देखियौ, मूड़ी सभ केहन हनहनायल बढ़ल जाइत छैक ?'

—तँ जेना बहिनपा लगाबऽ जाइत हो।' नीरा बाजलि आ भभा कऽ दुनू हँसलि जेना खूब हँसऽवला बात होइक।

क्षण भरिक बादे वैह पुरान-धुरान वातावरण पसरि जैतैक मुदा तावत सोमा बाजि उठलि—हमरासँ बहिनपा लगायब ?'

एकटा डैस सन कोनो अनजान-अदृश्य वस्तु दुनूक बीच पसरि गेलैक। नोराक आँखिमे जिज्ञासा उतरि गेलैक। एक रासायनिक प्रतिक्रिया जकाँ आँखि किछु क्षणक लेल चंचल भऽ कऽ स्थिर भऽ गेलैक।

—हँ लगायब, मुदा एखन नहि ...'

—एखन किएक ने ?'

—ओहिना, बहिनपा की ओहिना लागि जाइ छै ?'

दुतियाचान : तुलसीदल

—नै, किछु लेब-देब वला व्यवहार नै करू। हमरा नै धारै अछि। हमरा कुमुदक संग साड़ीसँ बहिनपा लागल छल, मुदा पाछाँ झगड़ा भऽ गेल।' सोमाक आगाँ कुमुदक तमसायल लाल मुँह आबि कऽ पसरि गेलैक। सोमा जे साड़ी कुमुदकेँ देने रहैक से कुमुदक साड़ीसँ अवश्ये दब छलैक। सोमाक देल साड़ी देखि कऽ कुमुदक मोन बिधुआयल सन भऽ गेल छलैक आ एक दिन कोनो बातपर तुनुकि कऽ उकटि देने रहैक, उलहन दऽ देने रहैक। आ सोमा बकर-बकर ओकर मुँह तकैत रहि गेलि छलैक। किछु ने बाजि भेल छलैक ओकरा।

ओहि दिनसँ सखी-बहिनपा लगयबासँ ओकर जी उचटि गेलैक। मुदा आइ तँ बेसोहेमे नीराक सोझाँ प्रस्ताव कऽ देलकैक। बेर-बेर अपना मोनसँ प्रश्न करैत रहलि जे एना किएक? कोनो आकर्षण, कोनो लोभ, कोनो तृष्णा तँ ने ओकरासँ करा देलकैक? नीराक सींथमे लागल सिन्दूर दिस नजरि गड़ि-गड़ि जाइत छलैक। कोनो तृप्ति भेटऽ लगैत छलैक। तँ की सिन्दूरक रेखा तँ ने ओकरा अपना दिस खीचि लेलकैक?

सोमाक अन्तरमे अपन समस्त पारिवारिक विषमता घिरनी जकाँ नाचऽ लगलैक। अपना बूझि पड़लैक जेना नीराक आगाँमे एकदम मुट्टि भऽ गेलि हो, एकदम छोट, एकदम लहु।

नीरा अवश्य-अवश्य किछु वस्तु सोमाकेँ देतैक आ सोमा ओकर प्रतिदान नहि दऽ सकतैक। सोचैत-सोचैत ग्लानि जकाँ होमऽ लगलैक। नीराक संग बहिनपा लगयबाक लोभपर पश्चात्ताप होमऽ लगलैक। भेलैक जे कोनो अपराध तँ ने कऽ गेलि !

मुदा नीरा प्रस्ताव सकारि लेलकैक। बहिनपाक प्रस्ताव नीरा हलसि कऽ मानि लेलकैक। सोमाकेँ खूब हर्ष होमऽक चाहैत छलैक मुदा कनेको आह्लाद नहि भेलैक। अपराधिनी जकाँ ठाढ़ि रहलि।

नीरा ओकरा बातक उत्तर एतबे देने छलैक—से कतहु भेलैक अछि ?'

सोमाकेँ अन्यमनस्क देखि नीरा पूछि देलकैक—अहाँ की सोचऽ लगलिऐक ?

—कहाँ किछु !' चोर-मोट पकड़यबाक डरसँ सोमा धड़फड़ा कऽ हँसैत उत्तर देलकैक आ भरि आँखि अबैत अपन नोरकेँ भितरे-भीतर पिबैत बाजलि छलि—सिन्तुर बड़ बढ़िया लगै अछि अहाँके .... ।'

नीरा लजा गेलि छलि।

तिनिये दिनमे दुनू कते ने हिल-मिलि गेलि। बहुत रास गप्प-सप्प दुनूमे भेलैक। नीरा सोमाकेँ अपन सियाइ-फड़ाइ,

कसीदा आ ऊनक बिनाइ आ मारि की कहाँ ने देखौलकैक। सोमा जेना भुतियाइलि जाइत छलि ओहि सिनेहक प्रदर्शनीमे।

नीरा देखबैत-देखबैत अपन फोटो सभक एलबम देखाबऽ लगलैक। नीराक विभिन्न सम्बन्धी सभक फोटो सभ। विभिन्न रूप-आकारमे नीराक फोटो सभ। सोमा ओकरा सभकेँ देखबामे तल्लीन रहितो कने संकुचित भऽ गेलि। सेहन्ता भऽ गेलैक। भेलैक जे फोटो जँ हमरो होइत! हम केहन लगितिऐक फोटोमे! तावत नीरा एलबम झाँपि देलकैक।

सोमा चौंकि कऽ पुछलकैक—एकरा किएक झाँपि देलिऐक—हे, अहाँकेँ सप्पत! देखऽ दियऽ ने?'

नीरा हँसैत देखा देलकैक—देखियौ पसिन्न पड़त?'

—के थिकाह?

—चिन्हियौ ने?

—अय! अहाँ नुकौने छलहुँ, अहाँक वऽर थिकाह। खूब जोड़ी अछि!' सोमाकेर हृदय आह्लादसँ आपूरित भऽ उठलैक मने। नीरा आ नीराक वऽरक फोटो देखि कऽ दृष्टि सतृष्ण भऽ उठलैक मुदा अपन तृष्णाकेँ नुकयबाक लेल आ प्रसंगक अनुकूल वातावरणकेँ विनोदपूर्ण बनयबाक लेल सोमा बाजलि—आब तँ होइत अछि अहाँक वियाह कालक रूप देखबामे हम हूसि गेलहुँ। दू-चारि बरख पहिनहि किएक ने भेंट भेल?'

—मुदा हमतँ आब नहि हूसब। हमरा तँ अहाँक नवकनिआ रूपक दर्शन अवस्से परि लागत।' नीरा खिलखिलाइत उत्तर देलकैक।

सोमाकेँ भेलैक जेना ओ पकड़ा गेलि सेन्हपर। ओकर विपन्नता - विवशतासँ वेदनायल मोन उत्पीड़ित भऽ उठलैक। सामनेमे परिधानपर फैसनक हल्लुक सन छाप लेने बैसलि नीराक माथपर चमकैत सिनुरक लाल धारी सोमाक हृदयकेँ खधोड़ि बनाबऽ लगलैक। ओकरा मोन पड़लैक अपन दुखिताहि बहीन, मोनक ममता आ सेहन्ताकेँ कोकनैत देखियो कऽ चुप्प रहनिहारि माय। मोन पड़लैक अपन संगी सभ जे माथपर सिन्दूर पड़िते देरी सोमाकेँ अपना समाजसँ बहिष्कृत कऽ दैत छलैक। सोमाकेँ विवाहित जीवनक वार्तालापमे संग देबाक अधिकार जे नहि छलैक……।

…नीराक माथपर सिन्दूर-रेखा देखि ओकरा कयबेर ने अज्ञात सेहन्ता भऽ गेल छलैक। कयबेर मोनमे भेलैक जे नीरासँ किछु पुछिऐक। ओकरा वऽरक सम्बन्धमे किछु बुझिऐक, सुनिऐक। मोन पड़लैक कुमुद, ओकरो लग एहिना सेहन्ता भेल छलैक………चिन्तनक एक विचित्र प्रकारक उजाहिसँ भरि गेलैक……'कुमुद बड़ खराब आदमी अछि। हमरा कोना कऽ लुलकारि लेने छलि! …आ अनुराग भौजी लग जा कऽ हमर

कौचर्ज कोना करऽ लागलि ! कोना बाजलि छलि जे—हे, दाइकेँ बियाहक गप्पमे जे मोन लगै छनि ! से छनि तँ किएकने मायकेँ कहै छथि जे एना अनठौने चुप किएक छेँ ?··· मुदा सोमाकेँ पेत्रोनपर पेत्रोन साटि कऽ दिन कटनिहार मायक प्रति कहियो आक्रोश नहि भऽ पबैत छलैक।

—हमरासँ कोनो अनट तँ ने भऽ गेल जे अहाँ एना एतीकाल सँ चुप्प आ गम्भीर छी।' नीरा सोमाकेँ मौन आ सुन्न दृष्टि देखि कऽ पुछलकैक।

सोमा हड़बड़ा उठलि—अय, हम कनेक मटसुन्न जकाँ छिऐक। कखनो काल कऽ एहिना भुतिया जाइत छिऐक।' सोमा बात सम्हारैत बाजलि।

सोमा नीराक ओ ओकरा वरक विभिन्न फोटो सभकेँ देखितो मोनमे जेना नीराक मिलान कुमुदसँ करैत जाइत छलि। बुझि पड़लैक जेना नीरा साक्षात् देवी अछि। एतेक सिनेहसँ कहाँ क्यौ अपन रोमांटिक जीवनक किछु क्षण सोमाकेँ देबाक कृपा कयने छलैक ?

नीराकेँ बूझि पड़लैक जेना सोमाक मोन भरिया गेल छैक। ओ प्रसन्न करबाक विचारेँ कहलकैक—आइ तँ नहि, काल्हि-खन चिट्ठी सभ पढ़ऽ लेल देब।'

—ककर चिट्ठी ?'

—आर ककर ?' नीरा मुस्कइत उत्तर देलकैक आ सोमाक हाथ पकड़ने ऊठि गेलैक।

दुनू गोटे हाथाजोड़ी कयने छतपर चल गेलि। दुनू गोटे सभ दिन छतपर अबैत छलि। मुरेड़ापर बैसि कऽ अलाय-बलाय गप्प सब करैत छलि। गमलाक फूल आ केरोटनक पात छूबैत छलि, डोलबैत छलि। श्रीमाली बाबूक मकानक छतपर सजा कऽ राखल गमलाक गाछ सभ नीराकेँ नीक लगैत छलैक, सोमाके नीक लगैत छलैक। किन्तु एहूसँ भिन्न एकटा उत्सुक दृष्टि गेलैक बबूरक काँटपर लतरल सजमनिक दुनू लत्ती दिस। दुनू लतीमेसँ एकटाक बाट घेरि लेने छलैक बबूरक झमटर डाढ़ि। मुदा तैयो ओकरा पार कऽ कऽ दूनू मीलि गेल छल। दुनू लत्तीक सूँघ मीलि कऽ मिलबाक बाट तैयार कऽ देने छलैक।

नीरा ओहि दिस आङुर देखा कऽ कहलकैक—देखियौ, दुनू मूड़ी सूँघमे सूँघ लपेटि कऽ घाड़ा-जोड़ी कऽ लेलकै जेना बहिनपा जोड़ि लेने हो।'

सोमा नीराक मुहसँ 'बहिनपा' शब्द सूनि कऽ सिहरि उठलि। ओहि दिन गप्पक झोंकमे बहिनपा लगयबाक प्रस्ताव कऽ देने रहैक मुदा बादमे बड़ छोभो भेल रहैक अपनापर··· जखन सप्पत खा लेने रही जे बहिनपा नहि लगायब तखन फेर हमही उपर खसि कऽ किएक कहलिऐक ?' आब अनठा देमऽ

चाहैत छलि। मोनमे विश्वासो भऽ गेलैक जे नीरा सेहो बिसरि गेलि। मुदा एखन वैह शब्द सूनि सौंसे देह झनझना गेलैक।

—हम तँ पहिनहि अपना मोनमे विचारने रही जे अहाँसँ पूछी जे बहिनपा लगायब ? आब लगा लितहुँ तँ बड्ड बढ़िञा होइतैक।' नीरा कोमल स्वरमे बाजलि।

सोमा नीराक एहि स्वरके कुमुदक संग मिलान कयलक··· उहुँ, नीरा कुमुद सनि नहि अछि। ओ तँ एकर पासङो बरोबरि ने हेतै··· अपन विचारक पुष्टिक लेल नीरा दिस तकलक तँ ओकरा आँखिमे वैह बहिनपाक प्रश्न दहाइत छलैक। एकटा आग्रहक छाहरि पसरल छलैक।

—बाजू ने, एना चुप किएक छी ?' नीरा बाजलि।

—मुदा किछु ' विवश भऽ बाजऽ लागलि सोमा, मुदा नीरा बाजऽ नहि देलकैक।

—व्यर्थे अहाँ किदन-कहाँदन सोचऽ लगै छी। मानल जे छुच्छ हाथे नहि लगाबी सङिता मुदा ताहि लेल एतेक गुनधुन की ?' नीरा कहलकैक आ सोमाक हाथ पकड़ि कऽ घीचिकऽ उठा देलकैक—चलू, आइ दुतिया थिकै। दुतियाक चानके गबाही राखि दी अपन सिनेह-जोड़ीक।

सोमाक मोन हकन्न कानि उठलैक। ओकरा तामस भेलैक अपनापर जे एना मतिछिन्न किएक भऽ गेलि ! तामस भेलैक

इन्नू भैयापर जे नीराक बापके ँ ओहिठाम किरायाक मकान किएक ताकि देलथिन। तामस भेलैक नीरापर जे ओहो एना लगरपन किएक कऽ देलक। निरुद्देश्य तामस भेलैक जे नीरा सँ संगे किएक भेल।

ओकर देह पिपरक पात जकाँ काँपि उठलैक—हे भगवती!

कुमुद फेर एक बेर सोमाक मस्तिष्कमे चमकि गेलैक। मुदा तैयो नीराक पाछाँ मन्त्रमुग्ध जकाँ चललि जाइत रहलि, जेना लोहाके ँ चुम्बक खिचने जाइत छैक। ओकर बाम हाथ नीराक हाथमे छलैक।

गमलाक लगमे आबि दुनू मौन भऽ कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि। क्यौ ककरोसँ बाजलि नहि। बिभिन्न प्रकारक फूल, करोटन, तुलसी आदिक गमला पाँतीजोड़सँ राखल छलैक। श्रीमाली बाबूक विधवा पत्नीके ँ आब ओहि गमला सभसँ कोनो विशेष मतलब नहि। जे गाछ बाँचल छलसे अपना भाग्ये ँ। मुदा तैयो तुलसीबला गमला श्रीमालीबाबूक विधवा पत्नीक धार्मिकताक गबाही दैत छल। प्रति दिन तुलसीक जड़िमे एक लोटा जल ढारब ओ किन्नहु नहि बिसरैत छलीह। ते ँ श्याम तुलसीक झमटगर गाछ झूमैत कोनो पूजामे समर्पित होयबा लेल प्रतीक्षा करैत छल।

सोमाक नजरि आकाश दिस गेलैक। पच्छिम दिस

Scanned by CamScanner

आकाशमे अमल - धवल चान बड़ नीक लगैत छलैक। शरद्-ऋतुक धुन्धिसँ दिशासभ भरि गेल छलैक। झोलफल सन साँझमे नीरा आ सोमा एक दोसराकेँ देखबाक प्रयास कयलक। नीरा फेर कहलकैक—बहिनपा लगाउ ने…।

सोमा अपन अन्तरक झंझाबात, बिहाड़ि, हाहाकारमे ओझरायलि छलि। ओकरा किछु उत्तर नहि फुरलैक।

नीरा अकस्मात् गमला दिस हाथ बढ़ौलक। तीन बेर चुटकी बजा कऽ तुलसीक एकटा पात तोड़ि कऽ बढ़ा देलकैक सोमाक दिस—लियऽ ने, आब तँ बहिनपा लगायब ?'

सोमाकेँ जेना एकेबेर बहुत रास प्रकाश भेटि गेलैक, एहन प्रकाश जकर कतौ अन्त नहि होइक। नीराक दृष्टि-अमृतसँ नहाइत - नहाइत ओ चिहुँकि उठलि—तुलसीदल ?'

—तुलसीदल !' सोमाक स्वरक संग नीरोक मुहसँ एतबे बहार भेलैक। दुनूक स्वर भिन्न, अर्थ भिन्न, अभिप्राय भिन्न। मुदा परिणाम छलैक एके, तुलसीदलक व्यक्तित्व छलैक एके। ओहिमे कोनो अन्तर नहि।

नीरा आ सोमा दुनूक दहिना हाथक कनगुरिया एक दोसरासँ गहुआ लगा गरदनिसँ गरदनि मीलि गेलैक। दुनू एक भऽ गेलि। बहिनपा भऽ गेलि……… तुलसीदल भऽ गेलि, तुलसीदल… …।

आ दुतियाक चान साक्षी भऽ कऽ देखैत रहलैक। * * *

शीतल बाती

····टपर···टप····टपर···टप····टप····टप····

पात सभपरसँ खसैत ओसक बुन्नक स्वर छलैक। सिङ्गरहारक फूल चूबि चूबि कऽ खसैत छलैक तकर स्वर छलैक। नन्नूदाइ अपन दुआरिक खम्हेलीसँ ओठङलि औंघाइत छलीह। आधासँ बेसी आङनमे इजोरिया पसरले छलैक। छाहरि तुलसी चौराकेँ छूबि देने छलैक मुदा नन्नूदाइक सिनेहसँ रोपल श्याम-तुलसीपर इजोरिया पसरले छलैक जेना चन्द्रा दूधक ढारसँ ओकरा नहबैत होइक।

अँखों···अँखों···अँखों···अँ···खों···खों····खों····।

नन्नूदाइ चौंकि कऽ जागि गेलीह—रह, कतेक खों-खों करै छै जगदेवा! भरि राति तऽ खोंखिते रहै छै। बावरक काढ़ा,

ने तऽ चारि चोट मऽधु पीपरि चटा दितै तुरन्ते तऽ ठीक भऽ जैतै। कालिह कहबै जगदेवा मायके"।

दूरपरसँ झिझियाक स्वर आबि रहल छलैक—

दुर दुर डैनिञा दुर बेटखौकी
कथी लय गुन-बान सिखले" गे……

—न, नै कहबै। ओ सब एक तरहक लोक अछि।' नन्नू दाइक मोनमे किछु उजाहि जकाँ ऊठि गेलनि—खोम्ह मानै छै। कहू, ककरो कोनो दबाइओ देखा दिअऽ तऽ ताहूमे गूने-बान रहै छै! इह, रडिनिञा सब झिझिया खेलाइ अछि!'

संभवतः नन्नूदाइ एकरा बाद, आरो किछु सोचितथि। किन्तु झिझिया खेलनिहार सभक एक-एकटा गीतक अर्थ मोन पड़ैत छलनि। भगवती थानसँ ओ सभ भगवती अराधि कऽ नन्नूदाइक घरक आगाँ दऽ नचैत जाइत छलि। डेढ़ पहर पहिनहि ओ सब गबैत गेल छलि—

"हँसुली गढ़ा दे हो बङाली बाबू हँसुली गढ़ा दे हो
हँसुली पहिरि कऽ झिझिया खेलबै डैनिञा देखतै हो
डैनिया देखतै हो बङाली बाबू नजरि लगौतै हो
चान सुरतिमे नजरि लगौतै आब नै जीबै हो……

आ ठीक नन्नूदाइक दुरुक्खा लग आबि कऽ एकटा अलगी छौंडी फुदुकि कऽ गाबऽ लागलि—

…… मइओ गे मइओ !

पक्की सड़कपर झिझिया खेलबै गे मइओ !

मइओ गे मइओ !

गली कुचीसऽ डैनिञा देखैत हेतै गे मइओ !

नन्नूदाइकेँ ठेहकि गेलनि। अपवादक चोखायल घाव जेना एके बेर हरियर भऽ गेलनि। हुनका आङन ओ सभ मङैयो नै अयलनि। यद्यपि ओ दितऽथिन की ? ने क्यौ हरिया ने गोहरिया। एकटा दोकान जाहिमे चारि आनासँ बेसीक पूजी नै छल हेतैनि। क्यौ बजार जाइत छलैक, तकरा दू-चारिटा पाइ थम्हा दैत छलथिन। ओ पीनी लेने अबैत छलनि आ तकरे केनमे एतेक चाउर …… थोड़ेक मड़ुआ …… दू मुट्ठी काउनि आबि जाइत छलनि। ओहिमेसँ लऽप भरि मकै ओरिया कऽ रखने छलथिन।

—गौरबाहि सब केहन ! बाट तकिते रहि गेलिऐ। जेना हम अछोप होइ !' नन्नूदाइ सोचैत रहि गेलीह। ओहिसँ बेसी ओ जेना किछु नै कऽ सकैत छलीह। क्रोध…… क्षोभ…… रोल… अभिरोख किछु नै भेलनि, खाली उदासीन भावेँ स्मृतिक गर्तमे डुबिते गेलीह।

ठोक साठि बरख पूर्वक जीवन-घटना काल्हिए जकाँ बूझि पड़लैनि। तेरह बरखक उमीरमे अपन माथक लालीकेँ चौमथ

घाटमे धो आयलि रहथि, सींथक रेखा मेटा गेलनि। ओहि दिनसँ बरखक लग्गीसँ अपना जीवनक खेतकेँ नपैत रहलीह, जकर कतौ ओरे-पाहि ने। एहन क्षणमे हुनकर मोन झुझुआ जाइत छलनि।

...अँखों अँखों...अँखों...खों...खों...खों...?

नन्नूदाइक कानमे फेर वैह पुरान ढों-ढों पड़लनि आ एकलक्खति पड़िते रहलनि। किन्तु एहि बेर हुनकर आधा ध्यान बँटि कऽ भगवती थान दिस चल गेलनि। सामने, पोखरिक दक्षिनबारी-पछबारी मोहारपर, भगवती थानक आगाँमे लाइट सब जरैत छलैक। सतमी, अठमी, नौमी; तीन दिन खूब नाच-तमासा होइत छलैक। सब साल। ओहि राति सौंसे परोपट्टाक तमसगीर सभ जुटल छलैक। दच्छिन रुखिक मन्दिरक पुबारी कात भालसरिक गाछ, दछिनबारी कात पिपरक गाछ आ पछबारी कातक कनैलक गाछ मन्दिरक रक्षक जकाँ अचल ठाढ़ छल।

...ओहि कनैलक गाछसँ बाकुट भरि फूल तोड़ि कऽ चढ़ायब हुनक नियम छलनि। अहल भोरे उठि कऽ भगवतीक पूजामे कहिओ फेर नहि भेलनि, भने माघक भिनसर रहौक की भादवक।

ओहि कनैलक गाछसँ आत्मीयता छलनि। ओकर पातो

टुटल देखि मोन कचोटि उठैत छलनि। परुकाँ साल ओकर एक अलङे मचोड़ि देने रहैक से ऐहू बेर मोन खुटखुटाइत छलनि।

—मंगला कालीक····जय!

—दुर्गा महारानीक····जय!

सामियाना गनगना उठल आ जयकारक घोषसँ दूर-दूर धरिक वायुमंडल घननादसँ भरि उठल।

नन्नूदाइ उठि कऽ आङनसँ बाहर चल अयलीह। सिङरहार तरमे ठाढ़ि भऽ कऽ चारूकात नजरि खिरौलनि। फूलक सुगन्धिसँ मह-मह करैत छलैक। नीचाँ फूलक पथार लागल छलैक। देहपर तीन-चारिटा फूल आ दू बुन्न ओस आबि कऽ खसलनि। ई गाछ भरि डाँड़क भेल रहनि तँ नेवतियाक पित्ती गाछ उपाड़ि कऽ फेकि देने छलनि। मारि कहूँ गारि-फज्झति देने रहनि। नन्नूदाइ चुपचाप सहि लेने रहथि। पहिने ई बाड़ी ओकरे रहैक। तखन नन्नूदाइ अपना आङन दिस कऽ रोपलनि। यैह सिङरहारक पात जान बचौलकैक नेवतियाक पित्तीक। छौ मास धरि जऽरसँ रिगड़ी कटलक तँ नन्नूदाइ दबाइ देखा देने छलथिन सिङरहारक पात पोसि कऽ पीबाक लेल।

सभक तीत-मीठ नन्नू-दाइक मनक खाधिमे जा कऽ डूबि

जाइत छल। नेवतियाक पित्ती कहने रहनि—चुरैल अछि ननुआँ, चकत्ता सन सानके ँ खा गेलि।' नन्नू दाइ से बिसरि नै सकलीह।

राति एखनो बहूतरास बाँकी छलैक। इजोरिया आरो थोड़ेक पच्छिम उतरि गेल छलैक। ओ चारू कात नजरि देलनि; सात-आठ टा खपड़ैल घर, दू तीन टा सिकमी आ ताहिसँ दच्छिन हिनक घर। घरक आगाँमे सिङरहारक गाछ, दू गोट फुलायल तीराक ओ छोटका गेनीक गाछ, पुबरिआ टाटपर सीमक लत्ती, पछबरिया टाटपर पोड़ो। कोनटामे कुम्हरक लत्तीमे साङह लागल आ पाखामे तीन-चारि गोट मूड़ी बौआइत लटकल। सभ हुनकर परिवार छलनि।

नन्नू दाइक इच्छा भेलनि सिङरहारक गाछके ँ नहू-नहू दोल दS दिऐक सिनेहसँ। किन्तु मे ओ कS नै सकलीह। जगदेवाक आँत दूहि कS खोंखबाक स्वर हुनक कान नोचि रहल छलनि। हुनक सौंसे हृदय जेना जंझर भS गेल छलनि, खोंखी सुनैत-सुनैत।

—खों···खों···माय गे माय···खों···माय···खों···गे···खों···खों···खों···' जगदेवा हकमि रहल छल। ओकर प्राण खोंखीक एकटा सूतेपर अँटकल होइक तेहने सन।

—मर; एहन लोकक कोन काज!' नन्नू दाइ भनभन करS

लगलीह—दुखित बेटाकेँ छोड़ि कऽ तमासा देखऽ गेलि। रहुँ, मोन पड़ल। ओकरा तऽ झिझियाक झुंडमे देखने छलिऐक। मारि देतै। जीयऽ नै देतै। सात्र मरि गेलै, ने वथौ हटनिहार ने डटनिहार। नै सम्हरै छै बेटा तऽ सगाइओ कऽ ने लेओ! बेटा-बेटीकेँ दुखमे कुभेला करतै आ मरतै तऽ कहतै जे डाइन कऽ देलक, तऽ जोगिन कऽ देलक। करसमा अछि·······।'

बीचेमे तमाकुल मोन पड़ि गेलनि। विचारक तार टूटि कऽ तमाकुलक सुरतामे ओझरा गेलनि।। भरि दशमी जागरन कऽ कऽ बितबैत छलीह। आँघी तोड़बाक लेल तमाकुल जरूरी छलनि। जिनगीक मैलछोन चुनरीपर दाग जकाँ छलनि ई तमाकुलक अभ्यास। नै मोन रहि गेलनि जे कहिया कोना ई अभ्यास पड़ि गेलनि। खाली ओकर अभ्यासे टा मोन रहि गेलनि। मोन रहलनि तमाकुलक संगक एक घटना······ पति तमाकुलक भीड़ा जेबीमे रखने रहथिन। नन्नूदाइक हाथमे ओ पड़ि गेलनि। ओ ओहि भीड़ाकेँ बाहर फेकि देलथिन आ पतिकेँ गंजन करऽ लगलथिन।

पति चुपचाप माथ झुकौने सुनैत रहलथिन। खाली कहलथिन—हे मायकेँ नहि कहबै, बड़ बात कहत।'

नन्नूदाइकेँ अपना पतिक ओ दयनीय चेहरा एखनो धरि

मोने छलनि। बिसरि नहि सकलीह। से ओहि तम कुलक अभ्यास जेना पतिएक स्मृतिमे हुनक आँचर धऽ लेलकनि।

ओ आँचरक खूटमेसँ तमाकुल बहार कयलनि किन्तु चून नहि छलनि। ओ फट्टक खोलि कऽ भीतर घर चल गेलीह। एकदम अन्हार-गुज्ज छलैक। खाली पाखाक झाँझन दने इजोरियाक रेखा अबैत छलैक। टोइया-टापर दैत-दैत जा निहूड़ि कऽ हथोड़िया दऽ कऽ चूनक बौड़की ताकथि कि पैर लागि कऽ मारते किदन सभ एके बेर हड़बड़ा गेलैक। पैर तरमे कन-कन पानि जकाँ पसरि गेलनि।

—जाह, गाइक घिउ हेड़ा गेलैक कि! आब की हेतैक? आब की लऽ कऽ भगवतीकेँ दीप देबनि? कते परिश्रमसँ सुच्चा गाइक घीउ उपर केने छलौं। काल्हि निशा पूजामे भरि राति भगवत्तीक मन्दिरमे दीप जरैत...।'

नन्नूदाइक हृदय भहरि गेलनि। गाइक घीमे हुनक साल भरिक जीवनक सत्त्व रहैत छलनि। भरि दुर्गा पूजा ओ गाइक घीसँ साँझ दैत छलीह आ निशा-पूजामे भरि राति हुनक दीप जरैत छलनि। नन्नूदाइक ई नियम छलनि। साल भरिक कमाइ ओहि घीमे खर्च करैत छलीह। पा भरि-आधा सेर घी हुनक तीर्थ-व्रतक समस्त इच्छाकेँ पूर्ण कऽ दैत छलनि।

ओ पुनः नंड-भंड भेल वस्तु सभकेँ सरियाबऽ लगलीह।

एकेबेर जी हलसि उठलनि। भेलनि जेना भगवतीक माया बड़कीटा छनि। ओ हाथसँ दू बेर-तीन बेर घीक सीसीक ठेकीकेँ छूलनि। ओहिमे कोढ़िलाक ठेकी ओहिना लागल छलैक। नन्नू दाइक माथ श्रद्धासँ कनेक झूकि गेलनि।

ओहि सीसीकेँ गोड़ा तर ओठङा कऽ रखलनि तँ हाथमे चूनक बौड़की पड़लनि। चूनक पानिसँ पैर भीज गेलि छलनि। ओंघरायल चूनक बौड़कीमेसँ चून बाहर कयलनि। आधासँ अधिक चूनतँ बँटा गेल छलनि ... सौंसे गामक लोककेँ चून चाही तँ दौड़ैत छल नन्नूदाइ लग। पहिने तँ ओ लाथ कऽ दैत छलथिन—नै छै, सठि गेलैक। कनिञ छै से अनकर छै कोना छुबिऐ।

फेर कहैत छलथिन—थम्हू, देखऽ दियऽ। बौड़कीमे होइ लागल-भिड़ल।' नन्नूदाइ लऽ कऽ दऽदैत छलथिन चून।

ओ तमाकुल चुना कऽ ठोर तर देबो ने कयलनि कि फेर कानमे जगदेबाक खोंखींक अनवरत धुनि पड़ऽ लगलनि। नन्नूदाइ प्रतीक्षा करऽ लगलीह जे ओ आब दम धरत, आब दम धरत। मुदा ओकरा आब दम नहि धऽ होइत छलैक। ओ खोंखिते जाइत छल। बीचमे माय गे! माय गे! केर गोहारि लगबैत जाइत छल।

नन्नूदाइ बेसी काल धरि ठाढ़ि नहि रहि सकलीह। बादक

ओहि पार सटले जगदेवाक घर छलैक। ओ ओकरा आइन्न दिस विदा भेलीह किन्तु मोन ततमत करैत छलनि—जगदेवा माय तँ हमरे आंसी-मांसीसँ गारि पढ़ैत अछि। जेना हमही कऽ देने होइऐ। हम ककरो रोआँ नै झलपौलिऐ ····।'

जगदेवाक खौंखिक बेगमे नन्नूदाइक ई तारतम्य सिम्मरक तूर जकाँ उधिया गेलनि।

ओ झटकारि कऽ जगदेवाक घरक दुआरिपर ऐलीह। घरक भीतर अन्हार गुज्ज छल। नन्नूदाइकेँ ओ दिन मोन पड़ि गेलनि जहिया ओ एहिना पैर बारि दुआरिपर आइलि छलीह। जगदेवाक बाप मनहरन जगदेवा मायकेँ पहिल विदागरी करा कऽ अनने छलैक। नन्नूदाइ देखलथिन जे घरमे डिबिया जरि रहल छैक।

पता नहि की मोनमे भेलनि- ओ चुपचाप जा कऽ मनहरनाक दुआरिपर ठाढ़ि भऽ ओहि दूनू बेकतीक गप्प सूनऽ लगलथिन··· अन्तरक कोनो सूतल सेहन्ता जागि गेल छलनि। ओहि दुनूक फुदुर-फुदुर गप्प सूनि कऽ नीक लागल रहनि। ओ एकबेर चूड़ीक झन-झन आ सरल सन खिलखिलाहटि सूनि कऽ रोमांचित जकाँ भऽ गेलि छलीह।

—ओ घर ककर छिऐ?

—नन्नूदाइक छिऐ।' भीतरमे मनहरनाक स्पष्ट बोल सूनि ओ सतर्क भऽ गेलीह?

—बालविधवा छिऐ बेचारी ?' मनहरनाक कनिञा बाजलि ।

—जनै छिऐ, ओकरा लोक डाइनि कहै छै ।'

—डाइन !!!' नन्नूदाइक मोन वितृष्णा भऽ गेल छलनि ।

—उँह तऽ की हेतै, हमरा की करत ? हमरा बड़ मानै छै। हम ओकर काज सब कऽ दै छिऐ ।'

नन्नूदाइ फेर सहटि कऽ अपना आङन चल आइलि छलीह। मनहरना मुइल रहैक तँ नन्नू दाइकेँ भेल छलनि जेना अपने बेटा-नाति मरि गेल होइनि ।

छू-छापसँ फराक रहनिहारि नन्नूदाइ दुसधिनिञा घरमे पैसलीह तँ देखलथिन जगदेबाकेँ एकसरे अहुछिया कटैत। हाथ-पैर छिड़ियौने, हाथ-हाथ भरि जीह बबैत। खुड़छाही जे कटने छल से सौंसे केत्था सभटा कऽ एकठाम जमा भऽ गेल छलैक। आठ बरखक छौंड़ा जगदेवाक प्राण अवग्रह मे पड़ल छलैक।

—कतऽ गेलौ ई दैतिनिञा, रे जग्गू !'

—के माय ?' जगदेवाकेँ आहटिसँ मायक आभास भेलैक। फेर नन्नूदाइकेँ चीन्हि कऽ बाजल—'ओ तऽ झिझया खेलऽ गेलै। कहलकै जे अखने अबै छी।' ओ खौंखीकेँ जँतैत बाजि गेल।'

शीतल बाती

—हूँ तऽ...अच्छा, सून तऽ रे जग्गू ! कोनो दबाइओ अनने छौ तोरा लय ?

—उँहु ।'

नन्नूदाइ जगदेवाक घड़घड़ाइत छातीपर हाथ रखलथिन। सुखले हाथें कनेक मालिस कयलथिन। फेर किछु सोचि कऽ बजलीह जग्गू हम कने अबै छी... ...।'

—ऐँआ ...... बड़ी खोंखी ... ...।'

—सब छुटि जेतौ, कनी दम धर।'

ओ अपना आङन ऐलीह। दीयठि पर राखल लत्तामे लपेटल सलाइमे एकटा काठी छलनि ताहीसँ डिबिया लेसलनि। सभ दिन साँझके भरल दसमीमे ककरासँ आगि मङितऽथिन आ के दितनि। तें सलाइ रखने छलीह। ओहिसँ दीप लेसि भगवतीक मन्दिरमे साँझ दैत छलीह।

तड़फड़ कऽ गोड़ा तरसँ घीक सीसी लऽ कऽ डिबिया मिझा देलथिन। चन्द्रमा डूबि गेल छलैकतें बाहरमे अन्हार कुप्प भऽ गेल छलैक। जगदेवाक खोंखी आ कहरनाइ ओहिना कानमे पड़ैत छलनि। ओ बाट पार कऽ कऽ गलियारी लग आबि गेलीह। अनचोकेमे कारी छायासँ टकरा जैतथि।

—के छी ?' नन्नूदाइ ई कहैत कने आरो लग चल गेलथिन— हे के छी... ... जगदेवा माय ?'

—हँ... ...' एकटा मिलमिलाइत सन हुँकारी भेटलनि।

—हे धत्‌''' केहन छह करेजक सक्कति ! बेटाक दम्म जाइ छलनि आ ई ''''' ''' ।'

—तऽ की करिऐ ? कोन दबाइ करिऐ ? कैंचा-कौड़ी रहै तखन ने दबाइ ओ-बीरो करबिऐ ।' जगदेवा मायक स्वर छलैक मद्धिम, थाकल, ठेहियायल मुदा कने गोंहछल सन—भगत ओतऽ गेल छलिऐ, काल्हि अबै लेल कहलकै।'

—हे, ई लैह, छातीमे पचा कऽ रगड़ि दिहक।' ओ गाइक घीक सीसी जगदेवा मायक हाथमे धरबैत कहलथिन नाकक दूनू पूरामे सुरका दिहक आ चटाइयो दिहक। एखने खोंखी लरम भऽ जेतै। कनी सुसुम कऽ दितहक तऽ आरो दीब होइतै ।'

जगदेवा माय हाथमे घीक सीसी रखने ठकुआइलि ठाढ़ि रहलि। तारतम्य, आश्चर्य, आशंका आ श्रद्धा सभ मिलि कऽ ओकरा बनमनकेँ बेसुध बना देलकैक । ओ अन्हारोमे आँखि निड़ारि कऽ नन्नूदाइकेँ देखबाक प्रयास करैत रहलि।

नन्नूदाइ ओकरा आङन दिस ठेलैत कहथिन—जा ने हे ! जा ने !'''ठाढ़ि की छह ? जा जा जाह''''''' ।'

जगदेवा माय आङन चल गेलि। नन्नूदाइ अपन सिङरहार तर आबि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलीह। बूझि पड़ैत छलनि जेना अष्टमीक निशा पूजामे भगवतीकेँ साँझ दऽ कऽ आयलि

होथि। ऊपर आकाश दिस तकलनि भोरहर जकाँ नहि बूझि पड़लनि। पुनः घर नहि गेलीह। अछोपसँ छुआ गेलि छलीह तेँ बिनु नहयने घर कोना जैतथि! दुआरिए पर बैसि गेलीह। हुनका कानमे मलीबाक आङनक भगतैक मृदंग-स्वर पड़ैत छलनि आ दूरपर सुगर-कोना टोलसँ एखनो अबाज अबैत छलैक... ...।

'.... चल चल गे डैनिआ बढ़म तर,
तोरा बेटाकेँ खेबौ कदम तर... ...' ***

नारिकेर

दुनू माय बेटीक काँइ-कटकट सुनैत-सुनैत अकच्छ भऽ गेलहुँ। आब तँ मन होइत अछि, ई मोहल्ला छोड़ि कऽ कतहु आनठाम चल जाइ। राति दिन कानमे झऽड़ पड़ैत रहैत अछि सैह नहि, कतहु यात्रापर बिदा होउतँ कानमे रंग-विरंगक शुभ-अशुभ गाँरि पड़ैत अछि ततबे नहि, सभ दिन दुनूक पंचैती करैत रहू। झगड़ा फरियबैत रहू।

आ आइ तँ आरो भोन घोर भऽ गेल। रातियेसँ बुढ़िया चर्र-चर्र करैत रहलि अछि। भोरे सूति कऽ उठैत छी की कानमे पड़ल रंग-विरंगक दस्तान। कोन राक्षसी अछि बुढ़िया से नहि जानि!

आन बेर चनियाँक बोल सेहो सुनैत छलऐक। बात-बात पर उतारा दऽ दैत छलैक आ ओहिपर बुढ़ियाकेँ लेसि दैत

छैक। मुदा काल्हिसँ आइधरि एको बेर ओकर बोल नहि सुनने छलिऐक। बुझिये ने पड़ल जे बुढ़ियाक बेटी चनियाँ सेहो छैक। बुझि पड़ल जेना बुढ़िया सकसरिए अछि आ कोनो जोगिनस गप्प करैत अछि।

बड्ड तामस होइत अछि एहि राक्षसी बुढ़ियापर। अपन सन्तानकेँ एना खाढ़ो-डाढ़ो करैत नहि देखने छलिऐक ककरो। जुआनि-जहानि छैक, पित्त-तामसपर जहर-माहुर खा लेतैक, इनार-पोखरि धसि जयतैक की ककरो संग चलि जयतैक से एकोरत्ती ने सोचैत छैक। ससुरबसू बेटी छैक, अनकर लोक, नहि सोहाइत छैक तँ बिदाइयो कऽ देतैक सेहो नहि।

मने सोचैत-सोचैत मोन अति विषण्ण भऽ गेल छल आ तेँ भेल भानस छोड़ि कऽ विनु खयने पोस्टआफिस अपन ड्यूटीपर चल अयलहुँ।

मोन एकोरत्ती नहि लागि रहल अछि। जेना ऊड़ी-बिड़ी लागल अछि। सोचैत रहैत छी जे एहि बुढ़ियाक साँय हमरा ई नोकरी पैरबी कऽकऽ धरा देने छल। आइ ओकर बोहु-बेटी कटवा-कटबी करैत छैक आ हमरा ताहिपर तामस होइत अछि।

आगाँमे बोराक बोरा डाक सभ उझिलल पड़ल छैक। सभकेँ सॉर्ट करबाक अछि, छँटिअयबाक अछि। ओह! आइ हमरा बुतेँ इ सभ किछु ने भऽ सकत, किछु ने।

अन्यमनस्के भेल कुर्सीपर बैसि जाइत छी चिट्ठीसभके सॉर्ट करबाक लेल। रंग-विरंगक अच्छर, हिन्दी, अङ्गरेजी, बंगला, उर्दू। पता नहि कतेक रंगक भाव-विचार, सुख-दुखक कथा एहि सभमे भरल होयतैक। हाथ निर्जीव मशीन जकाँ चलऽ लगैत अछि।

अकस्मात् हाथ रुकि जाइत अछि—एक टा लिफाफमेसँ मोड़ल कागत छिटकि कऽ बाहर चल अबैत छैक। एके बेर मोन तामससँ भरि जाइत अछि! मुँहसँ एक टा विनौन गारि अबैत-अबैत रुकि जाइत अछि तथापि मुँहसँ बाहर भऽ जाइत अछि—सार सभक बापक नोकर छनि। एहिठाम बैसल जे चिट्ठीसभके तहिया-तहिया कऽ सटैत रहतनि।

मुदा ओ गप्प सुनऽ लेल ओ लिफाफवला ओहिठाम नहि छल। लिफाफके कान होइते नहि छैक। हम लिफाफ उठा कऽ देखैत छी फ्रॉम—कोनो मौगीक नाम—जरूर अपन घरवलाके लिखलक अछि—बेस भरदुलाहि होइत अछि ई सभ। एक रत्ती लिफाफ सटबाक लूरि नहि।... फेर नजरि पड़ल, जतऽ चिट्ठी जयतैक तकरो स्थानमे मौगियेक नाम। हुँह... जरूर सखन अपन सखी-बहिनपाके चिट्ठी लिखलक अछि।

मौगीक लिफाफ फाड़बाक लति नहि, चिट्ठी पढ़ि लेबाक लति नहि, मुदा जखन कहनो मौगीक लिखल वा मौगीक

नामे लिखल पता देखैत छिऐक तँ एक टा औत्सुक्य जागि जाइत अछि—की लिखने होयतैक ? आ ततबे धार रहैत अछि।

लगमे बैसल माधो सिंह केहुनीसँ हुदकारैत अछि—आइ काम करैके मन न छौ की ?'

—न चचा ! आइ हमर मोन कोनादन करैत अछि।'

—तँ थोड़े काल अराम कर ले तब सार्टिङ्ग करिहे।'

आ हम एक कोनमे कुर्सीपर माथ टेकि कऽ बैसि रहैत छी तखनो हमरा हाथमे ओ चिट्ठी ओ लिफाफ रहैत अछि। हम मोन बहटारबाक लेल की उत्सुकतामे खोलि कऽ पढ़ऽ लगैत छी।

प्रिय— !

कुशल-क्षेम बड़ बढ़ियाँ। तोहर पत्र पाबि हर्ष भेल। समय कोनहुना बीतल जाइत अछि। एहि बेरुक दशमी एकदमे फिक्का बीतल। कतहु किछु ने देखलहुँ। मायकेँ कतेक बेर ने कहलिऐक मुदा ओ तैयारे ने भेल। हम तमसा कऽ कहलऐक—तमासा देखऽ गेने कोन अन्हेर भऽ जयतैक ? सौंसे गामक लोक तँ जाइते छैक।

—तँ के रोकैत छौक ? जो ने। जे लोक बातसँ नहि बूझत तकरा की कहि कऽ लोक बुझौतैक ?' माय तमसातइत बाजलि—नाम कटा ले स्कूलसँ। बाज छी पहन

पढ़ौनीसँ। कहैत छियनि हिनका जे मौगीकेँ पढ़ि कऽ की होयतैक; तँ बाते ने बुझैत छथि। सम्हारथु अपन दुलरैतिन बेटीकेँ। अनेरो बोल बाहरि भेल जाइत छनि, पड़तनि कपारपर त बुझथिन।'

माय तेना ने डटलक जे हमरा बुकौर लागि गेल। हम बोल-बाहरि छी से सूनि बड़ कचोट भेल। तोँही कहह जे कहियो हमरा स्वभावमे कोनो बितय देखलह अछि? तँ ओ गप्प सूनि कऽ की सभ मोनमे भेल से की कहियह? भेल जे एहि जिनगीसँ मुइनाइए नीक। आब जीबि कऽ की होयत? कतहु जहर-माहुर भेटैत तँ खा लितहुँ।

जा कऽ घरमे चौकीपर पड़ि रहलहुँ। पड़लि-पड़लि सोचैत रही जे जहरो जे खायब से भेटत कतऽ? मोन पड़ल जे घी आ मधु मिला कऽ पीने लोक मरि जाइत अछि। मुदा घी आ मधु महग। मने मुइनाइयो महग। घीक बदलामे जँ डालडा दऽ देलक तँ अधमरुए भऽ रहब। मोन पड़ल जे कनैल, ने तँ धुतहुरक बीया खयने सेहो मरि जाइत छैक। मालिक बाड़ीसँ लऽ आनी।

जानि नहि, एहि बीचमे कखन आँखि लागि गेल। साँझमे धड़फड़ा कऽ निन्न टुटल। माय हमर देह झमोड़ैत कहैत छलि—हय रानी! आइ सुतनाइये होयतैक की आरो काज?

नारिकेर

रानीदाइके सुतबासँ पलखति भेटनि तखन ने ! हम सभक नोड़िनि थिकियनि, नौड़पन करैत रहियौन।'

हम अकचका कऽ ठाढ़ि भऽ गेलहुँ। किछु कहबो करितैक जे कोन काज, तखन ने बुझितिऐक ?

—आइ भगवतीके साँझो पड़तनि की ओहिना रहतीह ? बेटी-डाँटीके पढ़ौने लिखौने यैह सभ होइत छैक की! अपन आचार-व्यवहार सभके बिसरि जायब।'

मोनमे भेल जे रतारा दऽ दिऐक—यैह गप्प जँ एक रत्ती नीक जकाँ बजबै तँ की किछु खर्च होयतौक ? मुदा हम चुप्पे रहलहुँ। भकुआयले आँखिएँ दीप लेसि कऽ बिदा भऽ गेलहुँ। मोन विचित्र प्रकारक उधियानसँ भरल छल। ... कखनो एको छन सुबोल नहि। सतत खोभाटनि आ फज्झति ...।

बाटमे रीता आ मीना भेटलि। ओ सभ दीप दऽ कऽ अबैत छलि। हमरा देखि कऽ रीता बाजलि—अय बहीन! हम अहाँक आङन गेलि छलहुँ। अहाँ सूतलि रही। काकी कहलनि जे तुरन्ने सूतलि अछि से एखन छोड़ि दियौक। निन्न पुरतैक तँ हम उठा देबैक। काँच निन्नमे उठने माथ दुखाय लगतैक। तखन आबि कऽ मीनाके संग कऽ कऽ अयलहुँ।'

हम रीताक गप्प सुनैत रही। रीता स्कूलमे पढ़ैत नहि अछि तँ कतेक प्रसन्न अछि ! हम पढ़ैत छी तँ सतत काल

फज्झतिए। स्कूलक नामपर खापड़ि। मोन नीम जकाँ तीत भऽ गेल छल।

रीता नेहोरा करैत बाजलि—आइ बड़ बढ़ियाँ नाटक थिकैक। अहींक संग हमहूँ देखऽ आयब।

—हम नाटक नहि देखब।' हमरा बेसी बाजल नहि गेल। रीता अप्रतिभ जकाँ हमर मुँह तकैत रहि गेलि। हम भगवती-स्थान दिस बढ़ि गेलहुँ।

ओहिठामसँ अयलहुँ तँ बाबू आबि गेल छलथिन, से हुनका पानि-तानि दऽ कऽ फेर दुआरिपरक चौकीपर बैसि रहलहुँ गुम्म-सुम्म। बाबू कहलथिन—भानस-भात जल्दी कऽ लियऽ। आइ बड़ बढ़ियाँ नाटक छैक।'

कतेक काल ओहिना बीति गेलैक। खा-पी कऽ बाबू फेर कहलनि—हय, दुनू माय-धी भगवती-स्थान अबिहह तँ रीता आ मीनाक आङनक लोककेँ सेहो संग कऽ लिहैन। लाइट १ठबा दैत छियह।'

हम नहुएँसँ कहलियनि—हम नहि जायब।

—किएक?'

—ओहिना, मोन ठीक नहि अछि।'

—की भेलह अछि? साँझेसँ गुम्म-सुम्म देखैत छियह।'

माय भनसा घरसँ आबि कऽ कहलकनि—हमही दिनमे तमसायलि छलिऐक तेँ कहैत अछि।'

हम ससरि कऽ भनसा घर चल गेलहुँ। बाबू मायपर बाजऽ लगलथिन—हम तँ जखने मोन उदास देखलिऐक कि भेल जे अहाँक देवता जागल छल होयताह। आब जे बात कहैत छियैक से नीक लगैत अछि ? कतेक बुझाउ ?'

बाबू तँ चल गेलथिन मुदा माय भनभनाय लागलि—हम यैह कान पकड़ैत छी जे किछु बाजी। अपन बेटी थिकनि, जेना मोन होइनि तेना राखथु। हम हँटनाहरि-डँटनाहरि के ?'

ओ भनसाघर आबऽ लागलि तँ हम सहटि कऽ दछिनबरिया घर चल गेलहुँ। हमरा नहि देखि माय बाजलि— गय, खयबो करबेँ की ? ··· कहू ने, कतऽ चल गेलि ? '

फेर डिबिया लऽ कऽ दछिनबारी घर आयलि। हम भीतरमे ओठङलि ठाढ़ि रही। ओ हमर डेन पकड़ि कऽ कहलक—जल्दीसँ खा-पी ले। तमासा देखऽ चलब।'

हम चुप्पे ठाढ़ि रहलहुँ। ओ फेर बाजलि—की ठाढ़ि छेँ ? चल ने ? राति बितैत छैक। बाबू तमासा देखऽ जयथुन।'

हम हाथ छोड़बैत कहलियैक—छोड़ हमरा। ने भूख अछि ने तमासा देखबाक अछि।'

—से किएक ?'

—ओहिना।' हमर आँखि ढबढबा गेल। आँखिक कोरमे नोरक बुन्न ढबकि गेल।

माय कनेक काल डिबिया लेने ठाढ़ि रहलि। फेर दीयठिपर

राखि कऽ हमरा लग आयलि। बाजलि—मायोक बातकेँ लोक एतेक गोख मानैत छैक गय ? आब तँ बात बुझऽवाली भेलेँ। पहिने घघरी-पुतली पहिरैत छलेँ, तखन सलवार-फ्राक पहिरलेँ, आब साड़ी पहिरैत छेँ। आब जे धीया-पुता जकाँ तमासा लय लोलि करबेँ से केहन लगतौक ? तेँ ने कहलियौक। एतऽ हमही किछु कहैव छियौक, जाहि घरमे जयबेँ ओहिठाम सासु-ननदिक तरमे रहऽ पड़तौक। सहनमा नहि बनने मौगिक निर्बाह नहि होइत छैक।'

हमर आँखिक नोर पोछैत बाजलि—माय-बापक डाँटो-दबारमे दुलारे रहैत छैक।'

हमरा भेल जे भोकासी पाड़ि कऽ कानऽ लागी। हम कहलिऐक—हम तँ बोलबाहरि छी …।' आगाँ बाजिए ने भेल।

—दुर बतही नहितन ! गय ! हमरा बेटी सन सतोजनी के ? हीरा-मानिक थीक हमर बेटी।' ई कहैत माय हमरा भरि पाँज कऽ धऽ लेलक। हमर सौंसे देह जेना लुजबुजा गेल। हम लारो-बातो भऽ गेलहुँ। अपन देह सम्हारमे नहि रहल तँ मायक छातीपर बेसम्हार छोड़ि देलिऐक। मायक छाती मक्खन जकाँ बूझि पड़ल। …

शेष सभ कुशले कहबाक चाही …।

तोरे—

नारिकेर

चिट्ठी खतम होइत होइत मोन आर विषण्ण भS जाइत अछि। एक बेर घनटि कS माधोसिंह दिस तकैत छी। जयबाक मोन नहि होइत अछि। .... आन बेरक झगड़ामे दुनू माय-बेटी पहुँचैत छलि पंचैती लय। जे किछु कहैत छलिऐक से सूनि यद्यपि बुढ़िया भमभनाइते रहैत छलि तथापि चनियाँ हमर गप्प मानि चुप्प भS जाइत छलि। .... एक रत्ती तामस भS जाइत अछि—हमरा बातपर चनियाँ किएक चुप्प भS जाइत छलि ? ओहो हमर बात काटि कS बुढ़िये जकाँ किएक ने बजैत छलि ?

फेर मोन क्षुब्ध भS जाइत अछि एहि बेर दुनूमेसँ ककरो पंचैतीक जरूरति नहि बूझि पड़लैक !

घड़ीपर नजरि जाइत अछि। एक बाजि गेलैक। कय घंटा हम बैसल रहि गेलिऐक ! बाहरमे तिक्ख असिनी रौद पसरल छैक। हम विमन भेल पड़ल रहैत छी कुर्सीपर। सहसा रमजानमियाँ हमरा कुर्सीकेँ झकझोड़ि दैत अछि। हलकासँ घुमल अछि से कान्हपर झोड़ा छैक। हम अकचकाकS ओकरा दिस तकैत छिऐक। ओ विचित्र सन मुँह बना कS कहैत अछि—रे ई आपिस है कि घरक बिछौना ? सोया हय ! एक ठो औरतिया खड़ी हो बहरामे।'

हम धड़फड़ा कऽ उठत छी—प्रायः बिनुआँ माय खायक लऽ कऽ अयलैक अछि। कोन काज छलैक अयबाक? लोक देखि कऽ की कहने होयतैक?

बाहर अबैत छी तँ क्यो नजरिपर नहि पड़ैत अछि। तामस होइत अछि, ई मौगी हमर नाक कटाओत! कनेक आगाँ बढ़ैत छी तँ देखैत छी पायासँ ओठङलि वैह बुढ़िया ठाढ़ि अछि। सौंसे देहमे आगि लागि जाइत अछि। मोन होइत अछि जे चारि थापड़ कसि कऽ दिऐक। मोन पड़ैत अछि ओहि पत्र लेखिकाक माय—फल्गुक धार सन स्नेहमयी! आ ई राकसीनी! कंकालिनी!

मुदा बुढ़ियाक दुनू गालपर बेस नोरक टघार देखैत छिऐक। मोन शंकासँ भरि जाइत अछि, चनियाँ छौड़ी आत्मघात तँ ने कऽ लेलकैक! सौंसे देह सिहरि उठैत अछि। अपना मोनमे होबऽ लगैत अछि जेना हमर बड़ पैघ वस्तु हेरा गेल।

हम करुण जिज्ञासु भऽ कऽ ओकरा दिस तकैत छिऐक।

ओ थोड़ेक चुप्पे रहैत अछि फेर बजैत अछि—आइ चारि साँझसँ छौंड़ी आपठ खसौने अछि। खयनाइ-पीनाइ त्यागने अछि। हम लाख बजैत रहू, ओ ने एक सबद उतारा दैत अछि ने ऊठि कऽ अनजल करैत अछि। जतरो दिन चूल्हिमे ऊक नहि पड़ल।'

[illegible] नारिकेर

हम ओकर मुँह टा तकैत छिऐक। ओ फेर कटु सत्य बजैत अछि—बिनु भाइ-बापक जुआनि बेटी बतासा होइत छैक, जे देखत सैह फोड़ि देबऽ लेल वृत्त। आ तेँ मेला-तमासा नहि जाय दैत छिऐक, नहि जाय देबिऐक। आ तकर ई फल। कोना कऽ ओकरा सभ बात खोलि कऽ कहियौक? आर ककरा कहबैक जा कऽ, के अपन अछि? तोँही कनियेँ चलि कऽ बौंसि दहक। तोहर बातो बुझैत छह।’

हमरा बूझि पड़ैत छ जेना ओहि पत्र-लेखिकाक माय जकाँ ईहो बुढ़िया नारिकेरक फड़ थिक। सभ माय नारिकेर होइत अछि—ऊपरमे विरूप, कठोर खपड़ोइया आ भीतरमे ढकर-ढकर पानि ...।

मुदा हमरा होइत अछि जे, जे बुढ़िया बतासाक फूटि जयबाक डरसँ डेराइत रहैत अछि से ओहि बतासाकेँ हमरा बोलस गला देबामे एना निश्शंक किएक अछि? * * *